ISSN 2394-756X

एग्रोवर्ल्ड फसल क्रांति

मूल्य: एक प्रति 60 रुपये

वर्ष – 12 अंक – 09 | www.fasalkranti.in | हरियाणा | सितम्बर 2025

एरिज़ एग्रो किसानों को दे रही हैं टिकाऊ खेती के समाधान

किसानों को बीज से बाजार तक समाधान देने का लक्ष्य-श्याम सुंदर सिंह

कैप्सबर एग्रीसाइंस जैविक कृषि में क्रांति लाने का मिशन-मनोज कुमार रूपा

इफको-एमसी ने मनाया 11वां स्थापना दिवस, भारतीय किसानों को सशक्त बनाने के 10 वर्ष किए पूरे

+91-9625941688 | info@fasalkranti.in

BKT
GROWING TOGETHER
bkt-tires.com
भारत का विकास
भारत का टायर
COMMANDER
BKT COMMANDER REAR
चावल की खेती के लिए
एकदम सही पिछला टायर

Coromandel
FUTURE POSITIVE
क्योंकि हम किसान जानते हैं,
सब हमारे भरोसे हैं,
इसलिए हमारा भरोसा! GROMOR
जिनके भरोसे दुनिया,
उनका भरोसा ग्रोमोर
DON'T USE HOOKS
FERTILISER
GROMOR
GroPlus
ग्रोमोर ग्रोप्लस
20:20:0:13 GROMOR
14:35:14 GROSHAKTI
15:15:15:09 (S) GROMOR

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा
100% Swadeshi
ACE TRACTORS
पेश है नया
ACE DI 6565AV 60.5 HP
TREM-IV ENGINE
4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन
4 सिलिण्डर 4088 CC हाई टार्क हैवी ड्यूटी इंजन
2000 kg लिफ्ट
तेल में डूबे ब्रेक (O.I.B.)
डूयल क्लच (D.C.)
पॉवर स्टीयरिंग (P.S.)
आगे के टायर 7.5 x 16
पीछे के टायर 16.9 x 28
ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध
कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004
अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध
रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883
ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

देहात
बीज से बाज़ार तक
उत्पाद दमदार
धान को मिले, सुरक्षा शानदार!
देहात
DeHaat
ATAQUE GR
ATAQUE GR
1 kg
DeHaat
BEESO
Herbi
1 Litre
DeHaat
LYMENTRIA
PYRAZOSULFURON ETHYL 10% WP
अधिक जानकारी के लिए 1800-1036-110 पर कॉल करें

विषयावली

एग्रोक्सी
फसल क्रांति
मासिक कृषि पत्रिका

वर्ष 12 | सितम्बर 2025 | अंक 09

संपादकीय....07

एग्री न्यूज....10

कम्पनी न्यूज....23

किसानों को बीज से बाजार तक समाधान देने का लक्ष्य–श्याम सुंदर सिंह....32

कैप्सबर एग्रीसाइंस जैविक कृषि में क्रांति लाने का मिशन – मनोज कुमार रूपा....33

एरिज़ एग्रो किसानों को दे रही हैं टिकाऊ खेती के समाधान....34

गुरविंदर कौरः तीन एकड़ जमीन से सफल डेयरी उद्यमी बनने तक का सफर....35

कोदों–कुटकी की उन्नत उत्पादन तकनीक....36
डॉ. स्मिता सिंह–डॉ. अखिलेश कुमार–मंजू शुक्ला–श्री संदीप कुमार शर्मा
डॉ. ए.के. पाण्डेय

गन्ना फसल में कीट प्रबंधन....38
संजय श्रीवास्तव

मसूर की वैज्ञानिक खेती से कमाये अधिक मुनाफा....42
अमितेश कुमार सिंह– श्रीप्रकाश सिंह– नवीन कुमार सिंह– मनीष पाण्डेय
राहुल कुमार सिंह– प्रतीक्षा सिंह– पूजा सिंह – अमित कुमार सिंह

सितम्बर महीने के कृषि कार्य....46
राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम

रसोई....48

सेहत....49

कुल पृष्ठ संख्या 56

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं प्रकाशक/सम्पादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजबीर सिंह **द्वारा स्वामी** एग्रोक्सी क्रॉप्स सोल्यूशंस प्रा. लिमिटेड **के लिए** रावत प्रिंटर्स, सी –177, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस –1, नई दिल्ली –110028 **से मुद्रित** तथा एक्स–96/1, गली न. 12, ब्रह्मपुरी, शाहदरा, दिल्ली–110053 **से प्रकाशित, सम्पादक** राजबीर सिंह।

सम्पर्क

ए–9, वेस्ट ज्योति नगर, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा, दिल्ली – 110094
011–45062737
in.linkedin.com/in/fasal-kranti-972698129
info@fasalkranti.in
www.fasalkranti.in
facebook.com/fasalkranti
instagram.com/fasalkranti/
twitter.com/fasalkranti
+91 9625941688, 9811250220

सलाहकार मण्डल

डॉ. एम.एल. जाट, सचिव (डीएआरई) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. बलराज सिंह, कुलपति, श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान

डॉ. ए.एस. पंवार, पूर्व निदेशक, आई.आई.एफ.एस.आर., मेरठ

डॉ. आनंद शर्मा, उप–महानिदेशक, भारतीय मौसम विभाग

डॉ. सौमित्र दास, निदेशक–इंडिया इण्टरनेशनल जिंक एसोसिएशन

डॉ. एस. एन. भेंड़े, कन्ट्री एग्रोनोमिस्ट, मोजैक इंडिया प्रा.लि., गुड़गांव

सम्पादक मण्डल

डॉ. के. एन. तिवारी, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, लखनऊ

डॉ. जे.पी.एस. डबास, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ. जे. पी. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान, चौ.च.सिं.ह.कृ.वि.वि., हिसार

डॉ. एस. एस. लठवाल, प्रधान वैज्ञानिक, एन.डी.आर.आई., करनाल

डा. धीरज कुमार तिवारी, वैज्ञानिक शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र, उन्नाव

डॉ. गजानन्द जाट, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर

डॉ. आर. एच. मीणा, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर

श्री राम निवास चौधरी, सहा. अनु. वैज्ञानिक, आनंद कृषि वि.वि., आनंद, गुजरात

संस्थापक	–	राजबीर सिंह
निदेशक	–	राजबीर सिंह
सम्पादक	–	राजबीर सिंह
कानूनी सलाहकार	–	संतोष प्रताप
वरिष्ठ पत्रकार	–	विपिन मिश्र
	–	इमरान इदरीसी
पत्रकार	–	फिजा काजमी
सोशल मीडिया मुखी	–	प्रदीप राणा
विडियो एडिटर	–	अयूष कुमार
निदेशक (मार्केटिंग)	–	रितिक कुमार
उपाध्यक्ष (मार्केटिंग)	–	फरहा खान
महाप्रबंधक (मार्केटिंग)	–	आरिफा खान
प्रबन्धक (विपणन)	–	तन्नू सिंह
सीनियर मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	निशा गुप्ता
मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	अंजली सिंह
		अंशिका वर्मा
		हिमांशी सैन
एकाउंट्स	–	एम सिद्दीकी
प्रसार सहायक	–	सनी चौधरी
		मोहित सिंह
सोशल मीडिया प्रबंधक	–	निशा शर्मा
		मनप्रीत कौर
डिजाइनिंग	–	धर्मेंद्र कुमार
कार्यालय सहायक	–	अंकित चौधरी
		ममता

वर्तमान कृषि संकट और आत्मनिर्भर भविष्य की तलाश

सम्पादक की कलम से,

भारत सदियों से कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की दो–तिहाई आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर करती है। लेकिन आज के समय में कृषि क्षेत्र अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, बाजार की अस्थिरता, लागत और लाभ का असंतुलन, तकनीकी असमानता और किसानों की आय में कमी जैसी समस्याएँ खेती को कठिन बना रही हैं। जब हम वर्तमान परिदृश्य को देखते हैं तो यह साफ हो जाता है कि कृषि केवल परंपरागत ज्ञान से नहीं चल सकती, बल्कि इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ठोस नीतिगत सुधार की आवश्यकता है।

सबसे बड़ी समस्या जलवायु परिवर्तन से जुड़ी है। मानसून अब पहले की तरह निश्चित नहीं रहा। कहीं अत्यधिक वर्षा से फसलें बर्बाद हो जाती हैं तो कहीं बारिश की कमी के कारण बोवाई प्रभावित होती है। बढ़ते तापमान और लगातार सूखा–बाढ़ जैसी स्थितियाँ किसानों की मेहनत पर पानी फेर देती हैं। यह सच है कि कृषि मौसम पर निर्भर है, लेकिन अब वैज्ञानिक तकनीकों और जल प्रबंधन के बिना खेती संभव नहीं रह गई है।

दूसरी बड़ी चिंता लागत और आय का असमान संतुलन है। खाद, बीज, कीटनाशक, डीजल और मजदूरी की लागत लगातार बढ़ रही है, जबकि फसलों के दाम उसी अनुपात में नहीं बढ़ते। किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ हर जगह नहीं मिलता और जो मिलता भी है, वह पर्याप्त नहीं होता। छोटे और सीमांत किसान इस असमानता की वजह से अक्सर कर्ज में फंस जाते हैं। सरकारी योजनाएँ राहत देती हैं, लेकिन उनका लाभ समय पर और पूरी पारदर्शिता के साथ किसान तक पहुँच पाना अभी भी एक चुनौती है।

आधुनिक समय में तकनीक खेती का चेहरा बदल सकती है। ड्रोन से छिड़काव, सैटेलाइट आधारित मौसम की जानकारी और मोबाइल एप के माध्यम से मंडी भाव जैसी सुविधाएँ किसानों की मदद कर सकती हैं। लेकिन हकीकत यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सीमित पहुँच और प्रशिक्षण की कमी के कारण अधिकांश किसान इन सुविधाओं से वंचित हैं। आधुनिक उपकरण महंगे हैं, जिससे केवल चुनिंदा बड़े किसान ही उनका उपयोग कर पाते हैं। अगर इस असमानता को दूर नहीं किया गया तो कृषि में डिजिटल खाई और चौड़ी हो जाएगी।

किसानों को सबसे ज्यादा परेशानी फसल बेचने के समय होती है। मंडियों में बिचौलियों का दबदबा, स्टोरेज की कमी और परिवहन की दिक्कतें किसानों की आय घटा देती हैं। मजबूरी में उन्हें कई बार लागत से कम दाम पर फसल बेचनी पड़ती है। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए ई–नाम जैसी डिजिटल मंडियों का विस्तार और किसानों को सीधे उपभोक्ता से जोड़ने की व्यवस्था मजबूत करनी होगी।

वर्तमान परिस्थितियों में जैविक और प्राकृतिक खेती भी नए विकल्प के रूप में उभर रही है। रासायनिक खाद और कीटनाशक के अंधाधुंध प्रयोग ने मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण दोनों को नुकसान पहुँचाया है। उपभोक्ताओं में भी अब स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। अगर सरकार और समाज मिलकर प्राकृतिक खेती, फसल विविधिकरण और शून्य लागत खेती को प्रोत्साहन दें तो यह किसानों की आय बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक होगी।

नीति स्तर पर कुछ ठोस कदम उठाना समय की मांग है। न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी गारंटी दी जाए ताकि किसानों को उचित आय सुनिश्चित हो। फसल बीमा योजना को सरल और पारदर्शी बनाया जाए जिससे प्राकृतिक आपदा की स्थिति में तुरंत राहत मिले। कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाओं को मजबूत किया जाए। किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर डिजिटल सुविधाओं से जोड़ना जरूरी है। इसके साथ ही जल प्रबंधन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि पानी ही भविष्य की खेती का आधार है।

कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक धुरी भी है। आज जब किसान कई चुनौतियों से जूझ रहा है, तब जरूरी है कि सरकार, वैज्ञानिक, समाज और किसान मिलकर समाधान खोजें। हमें ऐसी खेती व्यवस्था की ओर बढ़ना होगा जो लाभकारी हो, टिकाऊ हो और पर्यावरण के अनुकूल हो। तभी भारत का कृषि क्षेत्र आत्मनिर्भर बनेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य का आधार तैयार कर सकेगा।

राजबीर सिंह
संपादक

RMPCL
महावीरा
सुनहरे रबी की पहली किरण
Zironवाले खेतों के संग
इस रबी, अपने आलू, सरसों, गन्ना, गेहूं, किन्नू और चने की
फसलों को दें Ziron के पाँच तत्वों की शक्ति!
Zn
Ca
S
P
B
RMPCL
ZIRON
ZINC+BORON
एक ही उर्वरक,
रबी के फसलों की करें पूरी
हर ज़रूरत!
www.rmphosphates.com
Toll free: 8956926412

महिंद्रा ट्रैक्टर्स

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड, फॉर्म इक्विपमेन्ट सेक्टर, फॉर्म डिवीजन, एएफएस हैडक्वाटर्स, महिंद्रा टावर्स, पहली मंजिल, आकुर्ली रोड, कांदिवली (पू), मुंबई - 400101, भारत. फ़ोन: 28849588, फ़ैक्स: 28465813.
टोल-फ्री नंबर 1800 2100 700 | www.mahindratractor.com facebook.com/MahindraTractorsIndia
twitter.com/TractorMahindra youtube.com/MahindraTractorsofficial www.instagram.com/mahindratractorsofficial
नियम और शर्तें लागू। यह ऑफर महिंद्रा डीलर्स के सौजन्य से। ऑफर सिमीत समय के लिए उपलब्ध। अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर 1800 2100 700 पे कॉल करें।

किसानों ने प्रधानमंत्री मोदी में फिर से जताया विश्वास, अमेरिकी दबाव के खिलाफ सख्त रुख अपनाने का आग्रह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारत के किसानों को सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बताए जाने के बाद, आंध्र प्रदेश के अमरावती के किसानों ने प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अपना विश्वास दोहराया और घरेलू कृषि बाजारों को खोलने की अमेरिका की माँग के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाने का आह्वान किया। शहर के एक किसान, राममजनेयुलु ने प्रधानमंत्री मोदी के बयान का समर्थन करते हुए कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप मोदी को नहीं डराते।

देश और आंध्र प्रदेश के विकास में विश्वास व्यक्त करते हुए, किसान ने कहा, हमारी सरकार बहुत अच्छी तरह से काम कर रही है। मोदी की उपस्थिति में, हमारा मानना है कि आंध्र प्रदेश भारत के एक हिस्से के रूप में शानदार ढंग से फलेगा–फूलेगा। हमें पूरा विश्वास है कि यह समृद्ध और भव्य बनेगा। एक अन्य किसान, सीता रामय्या होप ने प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में आशा व्यक्त करते हुए कहा कि किसानों ने अमरावती के विकास के लिए राज्य में भूमि पूलिंग योजना के तहत कई एकड़ जमीन दी है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी शहर के विकास और पोलावरम परियोजना के लिए राज्य को अनुदान देने का वादा किया है।

किसान ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप और आंध्र के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी की तुलना भी की और रेड्डी को अप्रत्याशित और दूसरों को डराने की कोशिश करने वाला बताया। एमएस स्वामीनाथन शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारे लिए, हमारे किसानों का हित हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारत किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा। मुझे पता है कि हमें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, और मैं इसके लिए तैयार हूँ। भारत इसके लिए तैयार है।

उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब ट्रंप प्रशासन भारत से आने वाले सामानों पर टैरिफ को दोगुना करके 50 प्रतिशत कर रहा है। व्यापार वार्ता के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के कृषि बाजार, विशेष रूप से मक्का, सोयाबीन और कपास, तक पहुँच बढ़ाने पर जोर दे रहा था। हालाँकि, भारत ने अब तक घरेलू आजीविका और किसानों पर संभावित प्रभावों की चिंताओं के कारण कृषि क्षेत्र और डेयरी उत्पादों को खोलने का विरोध किया है।

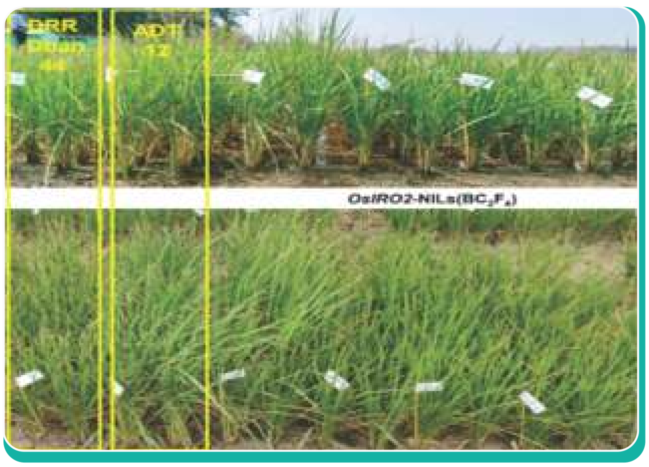

आईआरआरआई के वैज्ञानिकों ने सूखे में पैदा होने वाले धान के जीन की खोज की

अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) के वैज्ञानिकों और भारत में उनके सहयोगियों ने ऐसे जीन वेरिएंट की खोज की है जो प्रजनन अवस्था के दौरान सहनशीलता बढ़ाकर सूखे की स्थिति में चावल की पैदावार को बढ़ा सकते हैं। प्रजनन अवस्था एक महत्वपूर्ण अवधि होती है जब जल की कमी से उपज में भारी नुकसान हो सकता है। जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल बॉटनी में प्रकाशित यह अध्ययन, जीन OsIRO2 के एक ऐसे वेरिएंट की आशाजनक खोज पर प्रकाश डालता है जिसने व्यापक रूप से उगाई जाने वाली किस्म DRR धान 44 में शामिल किए जाने पर प्रबल क्षमता दिखाई।

आईआरआरआई की वैज्ञानिक डॉ. पल्लवी सिन्हा ने कहा कि इस खोज के माध्यम से, शोधकर्ता अब बेहतर चावल की किस्में विकसित कर सकते हैं जो पानी की कमी को और अधिक सटीकता से झेल सकें और साथ ही उच्च पैदावार भी बनाए रख सकें। किसानों के लिए, इसका मतलब बेहतर फसल और बेहतर लचीलापन है, खासकर जब जलवायु परिवर्तन तेज हो रहा है। परिणामों की पुष्टि के लिए, टीम ने विशिष्ट जीन वेरिएंट वाली चावल की प्रजातियाँ विकसित कीं, जिन्हें श्रेष्ठ हैप्लोटाइप कहा जाता है। इनका परीक्षण मूल जनक (DRR धान 44) और दाता जनक (ADT 12) दोनों के विरुद्ध कई क्षेत्र परीक्षणों में किया गया। कुल मिलाकर, विभिन्न स्थानों और बढ़ते मौसमों में 450 चावल प्रजातियों का मूल्यांकन किया गया। शोधकर्ताओं ने सूखा सहनशीलता के लिए महत्वपूर्ण लक्षणों से 67 आनुवंशिक संबंध पाए और प्रजनन कार्यक्रमों में प्राथमिकता देने के लिए दस प्रमुख जीनों की पहचान की। OsIRO2 जीन वेरिएंट विशेष रूप से उल्लेखनीय था।

आईआरआरआई के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रजनन प्रमुख डॉ. विकास सिंह ने कहा कि उन्नत आनुवंशिक उपकरणों का उपयोग करके और भारत में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर काम करके, हम जीनोम के उन सटीक भागों की पहचान करने में सक्षम हुए हैं जो चावल को सूखे से बचने में मदद करते हैं। इससे प्रजनकों को किसानों की फसलों की रक्षा करने वाली बेहतर किस्में विकसित करने का एक स्पष्ट और व्यावहारिक लक्ष्य मिलता है।

Zydex®
Innovating for Sustainability

ज़ायटॉनिक® तकनीक से
मृदा स्वास्थ्य नर्म, हवादार मिट्टी और अधिक जलधारण क्षमता

- अधिक अंकुरण, बेहतर वृद्धि और कम पानी की आवश्यकता। अनिश्चित मौसम की स्थिति (कम या अधिक पानी) मे भी शानदार रबी की फसल।
- ज़ायटॉनिक तकनीक पर आधारित जैव उर्वरकों के साथ, फसलों को संतुलित पोषण प्रदान करने के लिए प्राकृतिक समन्वय का उपयोग करें।

आइए, सभी के लिए सुरक्षित, स्वस्थ पौष्टिक भोजन की यात्रा शुरू करें।

info@zydexgroup.com
1800-12300-7666

Follow us :

अरहर में बाँझपन मोजेक रोग प्रतिरोधकता के लिए नए जीन की खोज

भारतीय किसान बाँझपन मोजेक रोग के कारण अपनी अरहर की उपज का 90% तक नुकसान उठा सकते हैं। हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में, डॉ. मनीष के. पांडे, प्रधान वैज्ञानिक–जीनोमिक्स, प्री–ब्रीडिंग एवं बायोइन्फॉर्मेटिक्स, आईसीआरआईएसएटी के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम ने आईसीएआर के सहयोगियों – भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (आईआईपीआर, उत्तर प्रदेश), डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरपीसीएयू, बिहार) और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई असम) के साथ मिलकर एक प्रतिरोधी जीन, सीसीएसएमडी04, की पहचान की है, जो बाँझपन मोजेक रोग के प्रतिरोध से जुड़ा है। उन्नत जीनोमिक्स, फेनोमिक्स और उच्च–शक्ति कम्प्यूटेशनल विश्लेषण का उपयोग करते हुए, टीम ने 'आशा' (आईसीपीएल 87119) में सीसीएसएमडी04 की खोज की, जो व्यापक रूप से उगाई जाने वाली, आईसीआरआईएसएटी–प्रजनित अरहर की एक किस्म है जो एसएमडी के प्रति प्रतिरोधी है। यह जीन एसएमडी के प्रति उच्च स्तर की प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है और भारत तथा पूरे एशिया में अरहर की अधिक टिकाऊ पैदावार प्राप्त करने की नई आशा प्रदान करता है।

आईसीआरआईएसएटी के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने कहा कि इस क्षेत्र में एसएमडी की गंभीरता को देखते हुए, आईसीआरआईएसएटी और आईसीएआर के शोधकर्ताओं द्वारा की गई यह एक ऐतिहासिक खोज है। पहचाने गए आनुवंशिक रूपांतर, जीन और मार्कर अधिक प्रतिरोधी अरहर की किस्मों के प्रजनन की अपार संभावना रखते हैं।यह नई खोज अरहर में एसएमडी प्रतिरोध के जीनोमिक पहलुओं पर प्रकाश डालती है। यह अध्ययन दो लोकप्रिय किस्मों, ष्आशाष और "मारुति" के संदर्भ जीनोम का उपयोग करता है, जो क्रमशः एसएमडी के प्रति प्रतिरोधी और अतिसंवेदनशील हैं, साथ ही एक आनुवंशिक आबादी से चुनिंदा नमूनों का भी उपयोग करता है जो चरम लक्षण प्रदर्शित करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि पौधों में एसएमडी प्रतिरोध ccsmd04 जीन द्वारा नियंत्रित होता है, जो एक निष्क्रियता/ऑक्सिन–संबंधित प्रोटीन का उत्पादन करता है, और तुलना ने अतिसंवेदनशील लाइनों में चार फ्रेमशिफ्ट उत्परिवर्तनों की पहचान की जो निष्क्रियता/ऑक्सिन–संबंधित प्रोटीन के कार्य को प्रभावित करते हैं।

डॉ. मनीष के. पांडे ने कहा कि हमने एक प्रतिरोधी जीन की पहचान की है और एसएमडी प्रतिरोध से जुड़े चार कार्यात्मक इनडेल मार्करों को मान्य किया है। इन मार्करों का उपयोग अब अरहर की प्रजनन संततियों की स्क्रीनिंग के लिए किया जा सकता है ताकि एसएमडी प्रतिरोध की प्रारंभिक पीढ़ी का चयन किया जा सके। यह जीन जानकारी जीन संपादन के माध्यम से आनुवंशिक सुधार के लिए भी मूल्यवान हो सकती है।

कृषि वायदा कारोबार में तेजी, एफपीओ बेहतर मूल्य पाने के लिए उत्सुक

कृषि जिंसों का वायदा कारोबार लगातार प्रगति कर रहा है। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 26 की पहली तिमाही में, 11.6 लाख से ज्यादा किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 702 किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) ने एनसीडीईएक्स पर कपास, जीरा, अरंडी, धनिया, हल्दी, अरंडी, कपास के बीज की खली और गार्ड बीजों जैसी कई जिंसों में कारोबार किया है।

कृषि मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि कमोडिटी एक्सचेंज के माध्यम से बिक्री से कृषि व्यापार का औपचारिककरण हुआ है, जिसमें भुगतान एफपीओ के बैंक खातों में जाता है और साथ ही सामूहिक रूप से किसान सदस्यों से एकत्रीकरण और खरीद सुनिश्चित होती है। वित्त वर्ष 2025 में कुल 2.25 करोड़ रुपये के विक्रय कारोबार में से, इस समूह ने एनसीडीईएक्स पर 1.5 करोड़ रुपये मूल्य की कृषि–वस्तुएँ बेचीं। चालू वित्त वर्ष में इस प्लेटफॉर्म पर 4 करोड़ रुपये का कारोबार करने का लक्ष्य है, जबकि पहली तिमाही में 750 किसानों के साथ इस समूह ने एनसीडीईएक्स प्लेटफॉर्म पर 1.5 करोड़ रुपये मूल्य की कृषि–वस्तुएँ बेची हैं।

किसान समूहों ने यह भी कहा है कि भविष्य के व्यापार के लिए और अधिक वस्तुओं को खोला जाना चाहिए, जबकि भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड ने सात कृषि वस्तुओं – धान (गैर–बासमती), गेहूं, चना, सरसों और उसके डेरिवेटिव, सोयाबीन और उसके डेरिवेटिव, कच्चा पाम तेल और मूंग के डेरिवेटिव अनुबंधों में व्यापार के निलंबन को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया है। वित्त वर्ष 2025 में, 340 एफपीओ ने 10 करोड़ रुपये से अधिक का बिक्री कारोबार किया है, जबकि 1100 से अधिक किसान समूहों ने 10 करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री की सूचना दी है। 1 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई हुई है। इन किसान समूहों का कुल कारोबार 15,282 करोड़ रुपये को पार कर गया है।

VST
SFM PRODUCT RANGE
SMALL FARM MACHINES
BRUSH CUTTERS
POWER WEEDERS
POWER REAPERS
POWER TILLERS - ELECTRIC START
FMTTI APPROVED PRODUCTS
POWERFUL & RELIABLE OPERATIONS
MADE WITH HIGH QUALITY COMPONENTS
SUITABLE FOR ALL STAGES OF FARMING
ASSURANCE OF SERVICE & SPARE PARTS
LIFE ELECTRIFIED
V.S.T. TILLERS TRACTORS LTD.
Plot No- 1, Dyavasandra Indl. Layout, Whitefield Road, Mahadevapura Post, Bangalore-560048, Karnataka. INDIA.
Phone: +91 - 80 - 67141111; website: www.vsttractors.com; CIN: L34101KA1967PLC001706. 1800 419 0136 info@vsttractors.com

एमएसपी पर समिति की अब तक 45 बैठकें संपन्न– शिवराज सिंह चौहान

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यसभा में बताया कि पूर्व कृषि सचिव संजय अग्रवाल की अध्यक्षता वाली न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) समिति की अब तक 45 बैठकें हो चुकी हैं। यह समिति जुलाई 2022 में गठित की गई थी, यानी सरकार द्वारा तीन विवादास्पद कृषि कानूनों को वापस लेते हुए इस तरह की समिति गठित करने का वादा करने के आठ महीने बाद। चौहान ने उच्च सदन में अपने लिखित उत्तर में कहा, कुल मिलाकर, अब तक 39 उप–समितियों/ उप–समूहों की बैठकों सहित 45 बैठकें हो चुकी हैं।

मंत्री ने जोर देकर कहा कि सरकार देश के किसानों तक एमएसपी का पूरा लाभ पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मंत्री ने बताया कि समिति का गठन एमएसपी प्रणाली को और अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के सुझाव देने के लिए किया गया था।

इसके अतिरिक्त, समिति को कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) को अधिक स्वायत्तता देने की व्यवहार्यता और इसे और अधिक वैज्ञानिक बनाने के तरीकों की जाँच करने के लिए कहा गया था।

उन्होंने कहा, उच्च मूल्य सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, देश की बदलती जरूरतों के अनुसार कृषि विपणन प्रणाली को मजबूत करने के लिए सुझाव देने का भी दायित्व सौंपा गया है।

समिति प्राकृतिक खेती और फसल विविधीकरण के विषयों पर भी काम कर रही है। अपनी स्थापना के बाद से, समिति इन प्रमुख मुद्दों पर विचार–विमर्श करने और कार्यान्वयन योग्य सुझाव तैयार करने के लिए नियमित बैठकें करती रही है।

केंद्र सरकार, राज्य सरकारों के विचारों पर विचार करने के बाद, कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर पूरे देश के लिए 22 अधिदेशित कृषि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली द्वारा वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के तत्वावधान में केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) उत्पादन तकनीकी विषय पर एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में दिल्ली एवं आस–पास के राज्यों से आए कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. डी.के. राणा द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. राणा ने बताया कि भारत एक युवा प्रधान देश है, जहां अधिकांश युवा ग्रामीण क्षेत्रों एवं कृषक परिवारों से आते हैं। ऐसे में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन न केवल जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने वाला साधन है, बल्कि यह स्वरोजगार के लिए भी एक उत्कृष्ट विकल्प प्रस्तुत करता है।

डॉ. राणा ने रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की ओर भी प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि रसायनों के अंश खाद्य उत्पादों में मिलने से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। इसके विपरीत, केंचुआ खाद के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है तथा सुरक्षित एवं पोषक उत्पाद प्राप्त होते हैं। उन्होंने जैविक कृषि की आवश्यकता, उपयोगिता और इसके दीर्घकालिक लाभों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा सभी प्रतिभागियों को वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन को एक व्यावसायिक अवसर के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया।

प्रशिक्षण का समापन एवं मूल्यांकन–

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया गया और उनसे उनकी प्रतिक्रिया ली गई। प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण की उपयोगिता, प्रायोगिक सत्रों की जानकारी एवं विशेषज्ञों के योगदान की सराहना की तथा भविष्य में वर्मी कम्पोस्ट को स्वरोजगार के रूप में अपनाने की रुचि जताई।

SEEDS OF SUCCESS

SOMANI SEEDZ®

HYB RADISH CROSS X-35

HYB CABBAGE TEZ (IMP)

HYB CARROT WONDER RED

HYB CAULIFLOWER KHUSHI

Farmers First Choice

SOMANI KANAK SEEDZ PVT. LTD.
HEAD OFFICE: C-91/7, 2nd FLOOR, WAZIRPUR INDUSTRIAL AREA, NEW DELHI - 110052, PHONE: (+91) 47505228, 47503925, 47053925, 8587967987, EMAIL: CONTACT@SOMANISEEDZ.COM, WEBSITE: WWW.SOMANISEEDZ.COM

ट्रम्प की टैरिफ धमकियों के बावजूद भारत–अमेरिका कृषि व्यापार उच्च स्तर पर

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ता में कृषि एक प्रमुख बाधा रही है। लेकिन बहुत से लोग यह नहीं जानते होंगे कि दोनों देशों के बीच इसी क्षेत्र में व्यापार वास्तव में तेजी से बढ़ रहा है और इस वर्ष यह एक नया रिकॉर्ड बना सकता है।

2025 में जनवरी से जून की अवधि में, भारत ने अमेरिका से 1693.2 मिलियन डॉलर मूल्य के कृषि उत्पादों का आयात किया, जो 2024 की इसी अवधि में खरीदे गए आयात (+1135.8 मिलियन) से लगभग 49.1% अधिक है। इसी समय, अमेरिका को भारत का कृषि निर्यात भी 24.1% बढ़कर 2024 की शुरुआत में 2798.9 मिलियन डॉलर से 2025 की शुरुआत में 3472.7 मिलियन डॉलर हो गया। ये आँकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि दोनों देशों के बीच कृषि वस्तुओं का व्यापार फलफूल रहा है।

भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने के बाद भी, अमेरिका के साथ व्यापार में वृद्धि देखी जा रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय वस्तुओं पर आयात शुल्क दोगुना करके 50 प्रतिशत कर दिया है। हालाँकि इसका पूरा प्रभाव अभी दिखना बाकी है, लेकिन शुरुआती संकेत बताते हैं कि दोनों देशों के बीच कृषि व्यापार अभी भी रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँचने की राह पर है। अगर यह वृद्धि जारी रही, तो इस साल अमेरिका को भारत का कृषि निर्यात 7.7 अरब डॉलर को पार कर सकता है। दूसरी ओर, IE रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका 2025 में भारत को 3.5 अरब डॉलर से ज्यादा मूल्य की कृषि वस्तुओं का निर्यात कर सकता है। भारत को अमेरिका का सबसे बड़ा कृषि निर्यात ट्री नट्स, मुख्यतः बादाम और पिस्ता है। 2024 में इनका मूल्य 1.1 अरब डॉलर से अधिक था और 2025 की पहली छमाही में इसमें 42.8 प्रतिशत की और वृद्धि हुई है।

अन्य प्रमुख वस्तुओं में इथेनॉल, सोयाबीन तेल और कपास शामिल हैं। पिछले साल भारत को 42 करोड़ डॉलर से ज्यादा मूल्य का इथेनॉल भेजा गया, जिसका ज्यादातर हिस्सा दवाइयों और रसायनों जैसे औद्योगिक उत्पादों के निर्माण में इस्तेमाल हुआ। अमेरिका चाहता है कि भारत ईंधन मिश्रण के लिए इथेनॉल के आयात की भी अनुमति दे, लेकिन भारत ने इस पर सहमति नहीं जताई है। भारत आनुवंशिक रूप से संशोधित मक्का और सोयाबीन का आयात करने से भी इनकार कर रहा है, जिनका निर्यात अमेरिका करना चाहता है।

भारत का सब्जी बीज व्यापार 2030 तक 970 मिलियन डॉलर होने की संभावना

2024 में 8.45 अरब डॉलर के मूल्य वाला वैश्विक सब्जी बीज बाजार तेजी से विस्तार कर रहा है और विशेषज्ञों का मानना है कि भारत इसका अगला प्रमुख केंद्र बनने की अच्छी स्थिति में है, बशर्ते सही नीतियां बनाई जाएं और प्रभावी ढंग से लागू की जाएं। राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) को मजबूत करने और जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ–साथ नीतिगत समर्थन प्रदान करने से भारतीय सब्जी बीज बाजार 2023–24 के 74 करोड़ डॉलर से बढ़कर 2030 तक 97 करोड़ डॉलर हो सकता है, जो 4.6% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ रहा है। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि आयुक्त डॉ. पी. के. सिंह ने कहा कि बागवानी, विशेष रूप से सब्जी उत्पादन में भारत का उदय, समृद्ध जर्मप्लाज्म, विविध विकास परिस्थितियों, अनुसंधान एवं विकास नवाचारों और निजी एवं सार्वजनिक संस्थानों द्वारा किए गए रणनीतिक निवेश से जुड़ा है। बीज क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास, संकर बीजों को अपनाने और विज्ञान–आधारित बीज उद्योग की ओर रुझान के कारण बागवानी हाशिये से मुख्यधारा में आ गई है। फिर भी, हमारी वैश्विक क्षमता का अभी भी काफी हद तक दोहन नहीं हुआ है।

भारतीय बीज उद्योग महासंघ (FSII) द्वारा राजधानी में आयोजित "भारत को वैश्विक बीज केंद्र बनाने में सब्जी बीज क्षेत्र की भूमिका" नामक राष्ट्रीय सम्मेलन में वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, कृषि वैज्ञानिकों, बीज उद्योग के नेताओं और नीति निर्माताओं ने नियामक बाधाओं और देश की निर्यात क्षमता को उजागर करने के तरीकों पर विचार–विमर्श किया। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव (बीज) अजीत कुमार साहू, आईएएस ने कहा कि भारत का बीज क्षेत्र एक निर्णायक मोड़ पर है। मंत्रालय लाइसेंसिंग को सुव्यवस्थित कर रहा है, विज्ञान–आधारित नियामक सुधार लागू कर रहा है। ये कदम यह सुनिश्चित करेंगे कि किसानों को पूर्ण क्यूआर–कोड–आधारित ट्रेसेबिलिटी वाले प्रमाणित, उच्च–गुणवत्ता वाले बीज समय पर प्राप्त हों, जिससे फसल के नुकसान को कम करने, उत्पादकता में सुधार करने और उन्हें नकली इनपुट से बचाने में मदद मिलेगी।

एंटी R.O.S टेक्नोलोजी से बना
भारत का पहला
एंटीऑक्सीडेंट

1. पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाता है।
2. सूक्ष्म जीवों की संख्या को बरकरार रखता है
3. पी एच मान को कम करने में मदद करता है।
4. पौधे की इम्युनिटी बढ़ाता हैं।
5. यह फसल की उपज एवं गुणवत्ता बढ़ाता है।

"वही जो सच है"

Feel Secure with Pure
THAKAR CHEMICALS LIMITED®

प्रधानमंत्री प्रणाम के तहत उर्वरक उपयोग में उल्लेखनीय कमी– सरकार

चौदह राज्यों ने 2023–24 में अपने संयुक्त उर्वरक उपभोग में पिछले तीन वर्षों के औसत से 1.51 मिलियन टन की कमी दर्ज की है। सरकार ने संसद में बताया कि यह केंद्रीय योजना **पीएम प्रणाम** के तहत हासिल किया गया है, जिसका उद्देश्य सब्सिडी में कटौती करना और राज्यों को रासायनिक सामाजिक पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना है।

2023–24 से पहले के तीन वर्षों में, उर्वरकों की वार्षिक खपत लगभग 58 मीट्रिक टन थी। सरकार किसानों को सालाना लगभग 60 मीट्रिक टन अत्यधिक सब्सिडी वाले उर्वरकों की आपूर्ति करती है, जिसमें से लगभग 18% आयात के माध्यम से पूरा किया जाता है। 2024–25 में, सरकार का यूरिया सब्सिडी खर्च 1.91 लाख करोड़ रुपये था। उर्वरक मंत्रालय ने बताया कि सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश प्रधानमंत्री प्रणाम योजना के अंतर्गत आते हैं। इसके साथ ही, उर्वरकों – यूरिया, डाइ–अमोनिया फॉस्फेट (डीएपी), एनपीके – नाइट्रोजन (एन), फॉस्फोरस (पी), और पोटेशियम (के) तथा म्यूरिएट ऑफ पोटाश (एमओपी) – की खपत में कमी लाने के लिए राज्यों को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। इस योजना के तहत, किसी राज्य द्वारा किसी विशेष वित्तीय वर्ष में पिछले तीन वर्षों की औसत खपत की तुलना में यूरिया, डीएपी, एनपीके और एमओपी की खपत में कमी लाकर बचाई गई उर्वरक सब्सिडी का 50% अनुदान के रूप में दिया जाता है।

उर्वरक मंत्रालय राज्यों को वैकल्पिक उर्वरक अपनाने और रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग को कम करने के लिए जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, जिससे मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आई है। अधिकारियों ने कहा कि अकेले रासायनिक उर्वरक के निरंतर उपयोग से मृदा स्वास्थ्य और फसल उत्पादकता पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है और अन्य पोषक तत्वों की कमी देखी गई है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने रासायनिक उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग और मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए अकार्बनिक और जैविक दोनों स्रोतों – खाद, जैव–उर्वरकों और पादप पोषक तत्वों के संयुक्त उपयोग के माध्यम से मृदा परीक्षण आधारित संतुलित और एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन की सिफारिश की है। उर्वरक विपणन कंपनियाँ उर्वरकों के संतुलित उपयोग, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन और जैविक खेती को बढ़ावा दे रही हैं।

इथेनॉल उत्पादन की चाहत में किसान तिलहन की खेती से हो रहे दूर

भारत में अधिक इथेनॉल उत्पादन की चाहत के कारण किसान तिलहन की खेती से दूर हो रहे हैं, जिससे दुनिया के सबसे बड़े खाद्य तेल खरीदार देश में महंगे आयात को कम करने के सरकारी प्रयासों को झटका लग रहा है। मक्का और चावल की रिकॉर्ड पैदावार से उत्साहित होकर, भारत इथेनॉल बनाने के लिए इन अनाजों का अधिक उपयोग कर रहा है और गैसोलीन में 20% जैव ईंधन मिश्रण के अपने लक्ष्य को पूरा कर रहा है। हालाँकि, इस प्रक्रिया से डिस्टिलर्स ड्राइड ग्रेन्स विद सॉल्यूबल्स (DDGS) का उत्पादन होता है, जो एक प्रोटीन युक्त उत्पाद है और पशु आहार बाजार में इसकी बाढ़ आ गई है।

DDGS की अधिकता के कारण तिलहन की माँग कम हो रही है, तिलहन की कीमतें गिर रही हैं और दक्षिण एशियाई देश के किसान सोयाबीन और मूंगफली की जगह मक्का और चावल की अधिक खेती कर रहे हैं – जबकि नई दिल्ली आयात कम करने के लिए तिलहन की अधिक खेती पर जोर दे रहा है। उद्योग अधिकारियों के अनुसार, भारत में DDGS का उत्पादन पिछले दो वर्षों में लगभग 13 गुना बढ़कर 2025 तक अनुमानित 55 लाख टन हो गया है।

एक प्रमुख सोयाबीन प्रसंस्करणकर्ता, पतंजलि फूड्स लिमिटेड के उपाध्यक्ष आशीष आचार्य ने कहा कि डीडीजीएस (डिग्री–मुक्त) बहुत बड़ी समस्या है। चारा निर्माता तेल–खली की जगह डीडीजीएस का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि यह सस्ता है।

सरकारी बुवाई के आंकड़ों में यह बदलाव साफ दिखाई दे रहा है। 8 अगस्त तक, सोयाबीन और मूंगफली सहित तिलहन की बुवाई का रकबा पिछले साल की तुलना में 4% कम था, जबकि मक्का का रकबा 10.5% बढ़कर रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँच गया।

पश्चिमी महाराष्ट्र के नासिक के एक किसान मधुकर लोंधे ने बताया कि उन्होंने सोयाबीन की बुवाई का रकबा छह एकड़ से घटाकर एक एकड़ कर दिया है और बाकी पर मक्का बोया है – जिससे उन्हें अपनी पाँच दुधारू गायों के लिए इसके डंठलों से चारा मिलने का अतिरिक्त लाभ मिलता है।

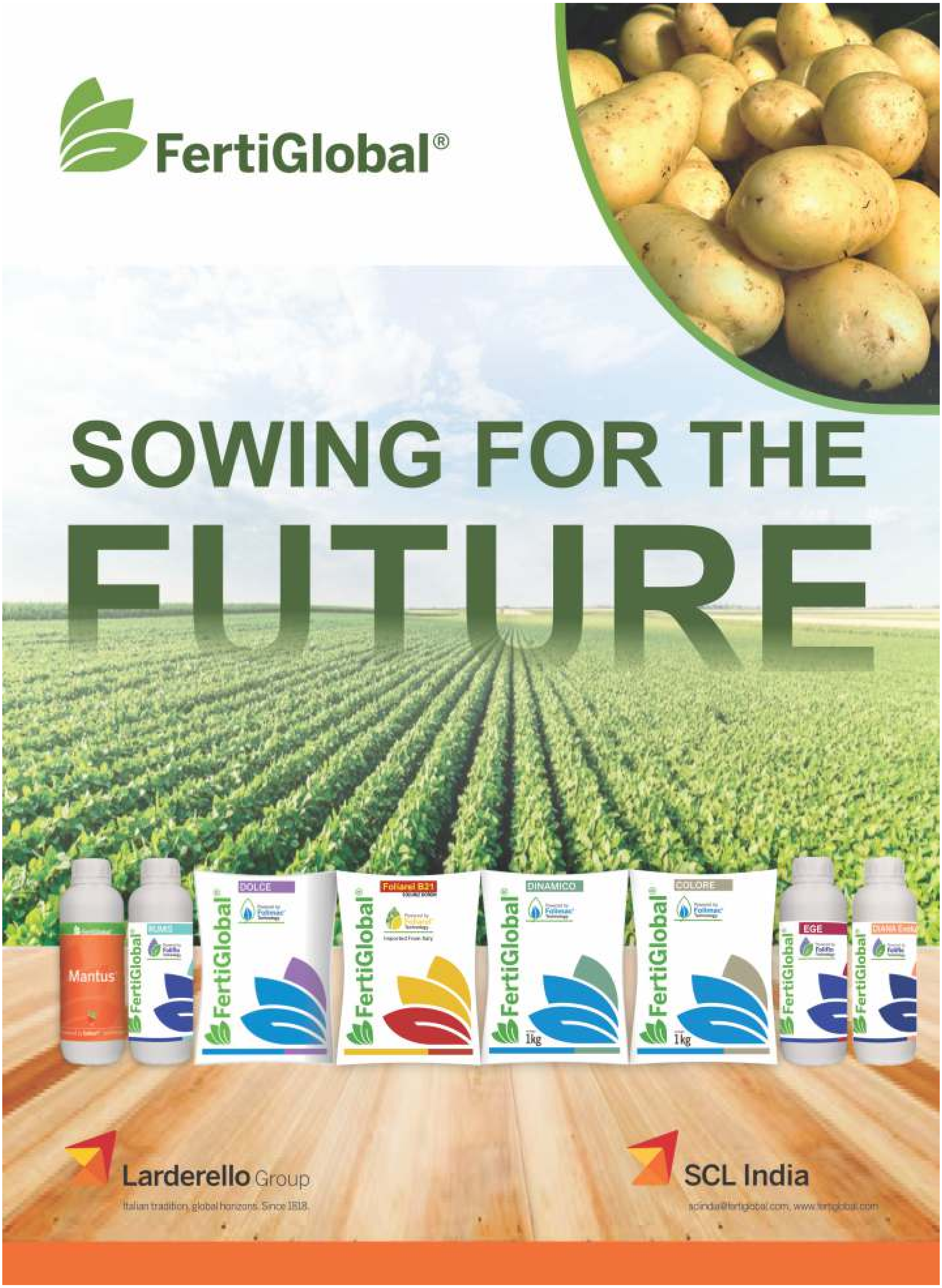
FertiGlobal®
SOWING FOR THE
FUTURE
Mantus
DOLCE
Foliarel B21
DINAMICO
COLORE
EGE
FertiGlobal
Larderello Group
Italian tradition, global horizons. Since 1818.
SCL India

भारत ने 27.22 करोड़ बोतलों की वार्षिक क्षमता वाले 7 नैनो यूरिया संयंत्र स्थापित किए

भारत सरकार देश भर में नैनो–उर्वरक संयंत्रों की स्थापना में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं है। उर्वरक कंपनियों द्वारा कुल 7 नैनो यूरिया संयंत्र स्थापित किए गए हैं, और वर्तमान में संचालित इन सभी नैनो यूरिया संयंत्रों की कुल उत्पादन क्षमता 27.22 करोड़ बोतलें (प्रत्येक 500 मिली) प्रति वर्ष है। स्थापना के बाद से, उर्वरक कंपनियों ने आदिवासी बहुल क्षेत्रों सहित देश के सभी क्षेत्रों में नैनो यूरिया की 10.68 करोड़ बोतलें (प्रत्येक 500 मिली) और नैनो डीएपी की 2.75 करोड़ बोतलें (प्रत्येक 500 मिली) बेची हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और अन्य उर्वरक कंपनियों ने 3 और नैनो उर्वरक संयंत्रों की स्थापना की सूचना दी है, जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 17 करोड़ बोतलें (500 मिलीलीटर समतुल्य) प्रति वर्ष होगी।

देश भर के किसानों के बीच नैनो उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं–

1. कृषि एवं किसान कल्याण विभाग (डीए एंड एफडब्ल्यू) ने राज्य सरकारों से अपने विस्तार तंत्र के माध्यम से अपने राज्यों में नैनो उर्वरक के उपयोग को बढ़ावा देने का अनुरोध किया।
2. नैनो यूरिया के उपयोग को विभिन्न गतिविधियों जैसे जागरूकता शिविर, वेबिनार, क्षेत्र प्रदर्शन, किसान सम्मेलन और क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्में आदि के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है।
3. नैनो यूरिया और नैनो डीएपी संबंधित कंपनियों द्वारा प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्रों (पीएमकेएसके) पर उपलब्ध कराए जाते हैं।
4. नैनो यूरिया को उर्वरक विभाग (डीओएफ) द्वारा नियमित रूप से जारी मासिक आपूर्ति योजना में शामिल किया गया है।
5. भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल के माध्यम से आईसीएआर ने हाल ही में उर्वरकों (नैनो–उर्वरकों सहित) के कुशल एवं संतुलित उपयोग पर एक राष्ट्रीय अभियान का आयोजन किया।
6. पत्तियों पर छिड़काव के माध्यम से नैनो यूरिया जैसे नैनो उर्वरकों के प्रयोग और उपयोगिता को आसान बनाने के लिए, किसान ड्रोन जैसे नवीन छिड़काव विकल्पों और खुदरा दुकानों पर बैटरी चालित स्प्रेयरों के वितरण जैसी पहल की गई हैं।

भारत–अमेरिका व्यापार वार्ता में गतिरोध किसानों के हित बनाम बाजार की मांग

भारत और अमेरिका के बीच चल रही व्यापार वार्ता पाँच दौर की बातचीत के बाद ठप हो गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50% टैरिफ लगाने के बाद उन्होंने साफ कर दिया कि जब तक टैरिफ का मामला सुलझ नहीं जाता, तब तक आगे कोई वार्ता नहीं होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी स्पष्ट किया है कि वह किसानों, डेयरी और मछुआरों के हितों से समझौता नहीं करेंगे, चाहे इसके लिए उन्हें राजनीतिक या आर्थिक कीमत क्यों न चुकानी पड़े। वार्ता में सबसे बड़ा विवाद कृषि, डेयरी और मत्स्य पालन क्षेत्रों में अमेरिकी कंपनियों को प्रवेश देने को लेकर है। अमेरिका चाहता है कि भारत मक्का, सोयाबीन, सेब, कपास, बादाम, इथेनॉल और कई अन्य कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम करे और आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) मक्का, सोया, कैनोला और कपास को भारतीय बाजार में आने दे। साथ ही, अमेरिकी डेयरी आयात को मंजूरी देने की भी मांग की जा रही है।

भारत इन मांगों को मानने के लिए तैयार नहीं है। कारण यह है कि सस्ते अमेरिकी कृषि और डेयरी उत्पाद भारतीय बाजार में बाढ़ ला सकते हैं, जिससे घरेलू कीमतें गिरेंगी और छोटे किसानों को भारी नुकसान होगा। भारतीय डेयरी पर अमेरिकी चारे की पद्धतियों को लेकर सांस्कृतिक और आहार संबंधी आपत्तियां भी हैं, क्योंकि अमेरिका में मवेशियों को अक्सर पशु–आधारित उत्पाद खिलाए जाते हैं। मूल रूप से यह टकराव दोनों देशों के किसानों के हितों को लेकर है। अमेरिका अपने किसानों को, जो वहां एक मजबूत राजनीतिक गुट हैं, अधिक बाजार पहुँच दिलाना चाहता है। दूसरी ओर, भारत अपने किसानों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना चाहता है।

AGMA Energy Pvt Ltd.
KRISHAJ
काज़ुकी एनर्जी™
अब धान खिले
धन धना धन
POWERED BY
UPT
TECHNOLOGY
FROM ALGAENERGY, SPAIN
Approved by
ECOCERT
INPUTS
KAZUKI
ENERGY
प्रयोग मात्रा
५०० मिली.
प्रति एकड़
*अधिक जानकारी के लिए के–मैक्स नोलेज़ सेन्टर
1800-572-5065 पर सम्पर्क करें।
ECOCERT
द्वारा अनुमोदित
UPT®
अल्टीमेट परफॉरमेंस तकनीक द्वारा तैयार
तकनीक स्पेन की
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
Technology from
ALGAENERGY
Spain

भारतीय सूक्ष्म–उर्वरक निर्माताओं ने एकीकृत लाइसेंसिंग, निर्यात उदारीकरण और जैव–उत्तेजक सुधार की मांग की

इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित एक उच्च–प्रभावी नीतिगत सम्मेलन में, भारतीय सूक्ष्म–उर्वरक निर्माता संघ (IMMA) ने नवाचार, विनियमन, उन्नयन: भारत के उर्वरक भविष्य को आकार देना विषय पर अपने व्यवसाय–से–सरकार (B2G) गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में भारत के गैर–सब्सिडी वाले उर्वरक क्षेत्र के लिए एक सुधार–उन्मुख रोडमैप तैयार करने हेतु प्रमुख नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, नियामकों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया।

IMMA के अध्यक्ष, डॉ. राहुल मीरचंदानी ने सत्र की शुरुआत करते हुए कहा कि यह गोलमेज सम्मेलन एक दूरदर्शी उर्वरक पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने के हमारे सामूहिक संकल्प को दर्शाता है, जो नवाचार को सक्षम बनाता है, किसानों के विश्वास की रक्षा करता है और स्थिरता की अनिवार्यताओं के साथ संरेखित होता है।

IMMA के उपाध्यक्ष, समीर पठारे ने इस बात पर जोर दिया कि आज के एजेंडे के छह बिंदुओं में से प्रत्येक हमारे सदस्यों को प्रभावित करने वाले एक जीवंत मुद्दे का प्रतिनिधित्व करता है। आज, हमने सहयोगात्मक समस्या–समाधान की दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया है।

चर्चा के प्रमुख क्षेत्रों में से एक राज्य–अधिसूचित उर्वरक ग्रेड को अद्यतन करने की तत्काल आवश्यकता थी। विशेषज्ञों ने खुले स्रोत मृदा स्वास्थ्य आँकड़ों पर आधारित मृदा–विशिष्ट फॉर्मूलेशन की वकालत की। डॉ. ए.के. नायक, उपमहानिदेशक – प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, आईसीएआर ने कहा, स्थायी और इष्टतम मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए अद्यतन पोषक तत्व फॉर्मूलेशन की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि एफसीओ अनुसूची में शामिल करने के लिए केवल सत्य लेबलिंग पर निर्भर रहने के बजाय प्रभावकारिता आँकड़ों का समर्थन होना चाहिए।

नकली उत्पादों से निपटने के लिए आईएमएमए की उद्योग–नेतृत्व वाली पहल को स्व–नियमन के एक मॉडल के रूप में भी प्रशंसा मिली। डॉ. श्याम बाबू, निदेशक – केंद्रीय उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदाबाद ने साइट पर सत्यापन के लिए गुणात्मक परीक्षण किटों के सह–विकास में सहायता का आश्वासन दिया।

हापुड़ केवीके द्वारा आयोजित किया गया बासमती धान पर जागरूकता कार्यक्रम

बीते सप्ताह कृषि विज्ञान केन्द्र, बाबूगढ, हापुड़ पर बासमती निर्यात प्रतिष्ठान, मोदीपुरम, मेरठ द्वारा खरीफ 2025 के दौरान बासमती चावल के उत्पादन के लिए कीटनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग और अच्छी कृषि पद्धतियों को अपनाने पर जागरूकता कार्यक्रम कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उदद्याटन सरदार वल्ल्भभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ के डॉ. पी.के. सिंह द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। उदघाटन कार्यक्रम में बी.ई.डी.एफ. के संयुक्त निदेशक डॉ. रितेश शर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यशाला में बासमती निर्यात प्रतिष्ठान मोदीपुरम मेरठ के संयुक्त निदेशक डॉ. रितेश शर्मा द्वारा गुणवत्तायुक्त बासमती धान पैदा करने की तकनीकी जानकारी देकर किसानो को लाभांवित किया गया एवं फसल में कीटनाशकों का सही प्रयोग करने की सलाह दी।

केन्द्र के प्रभारी डॉ. अरविन्द कुमार ने केन्द्र द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा कर गुणवत्तायुक्त बासमती धान उत्पादन पर प्रकाश डाला। उद्यान वैज्ञानिक डॉ. वीरेन्द्र पाल गंगवार ने सब्जी की खेती में लगने वाले कीटो व इनके बचाव पर विस्तार से चर्चा की डॉ. आशीष त्यागी, कीट विज्ञान ने धान में लगने वाले रोगों के बारे में भी जानकारी दी। डॉ. पी.के. मडके ने बताया कि कार्बनिक खादों का प्रयोग करते हुये प्राकृतिक खेती के महत्व पर चर्चा की। गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. विनिता सिंह द्वारा बासमती चावल को घर पर सुरक्षित रखने हेतु घरेलू उपायों पर चर्चा की। कृषि प्रसार विशेषज्ञ डॉ. नीलम कुमारी ने केन्द्र सरकार व राज्स सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं पर चर्चा की। डॉ. वीरेन्द्र पाल गंगवार द्वारा मंच का संचालन किया गया। एक दिवसीय कार्यशाला में जनपद के विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं लगभग 205 कृषकों ने भाग लिया।

इफको-एमसी ने मनाया 11वां स्थापना दिवस, भारतीय किसानों को सशक्त बनाने के 10 वर्ष किए पूरे

भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड और जापान की मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के संयुक्त उपक्रम इफको–एमसी क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने 28 अगस्त 2025 को अपना 11वां स्थापना दिवस मनाया।

समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसका नेतृत्व प्रमुख अतिथियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने किया। इस अवसर पर इफको–एमसी के चेयरमैन राकेश कपूर, निदेशक डॉ. आर. पी. सिंह, मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष माकोतो हसेगावा, इफको–एमसी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (MD & CEO) मनोज वार्ष्णेय, संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी रोहित चोपड़ा, मुख्य परिचालन अधिकारी तरुण भार्गव सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

10 वर्षों की उपलब्धियों पर दृष्टि

स्वागत भाषण में सीओओ तरुण भार्गव ने पूरे देश से जुड़े फील्ड टीम के सदस्यों का आभार जताते हुए कंपनी की विकास यात्रा को रेखांकित किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाला दशक कंपनी के लिए और भी परिवर्तनकारी होगा।

इस मौके पर इफको–एमसी की 10 वर्षीय यात्रा पर आधारित विशेष फिल्म प्रस्तुत की गई, जिसमें कंपनी की नवाचार, प्रतिबद्धता और चुनौतियों को पार करने की कहानी दिखाई गई। साथ ही कंपनी ने अपने नए कॉर्पोरेट वेबसाइट का भी शुभारंभ किया, जिससे किसानों और हितधारकों के साथ डिजिटल जुड़ाव और मजबूत होगा।

अपने संबोधन में एमडी एवं सीईओ मनोज वार्ष्णेय ने कहा कि टीमवर्क ही वह शक्ति है जो साधारण लोगों को असाधारण परिणाम दिलाने में सक्षम बनाता है। उन्होंने पिछले दशक की प्रमुख उपलब्धियों को गिनाया। उन्होंने किसान हितैषी पहलुओं, जैसे किसान सुरक्षा बीमा योजना, ZenNexa ब्रांड के तहत जैविक समाधानों का विस्तार, खरीफ 2026–27 में एक पेटेंटेड उत्पाद का लॉन्च और तकनीक एवं नवाचार के माध्यम से भविष्य की दिशा का उल्लेख किया।

साझेदारी और भविष्य की दिशा

मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के निदेशक नाओहिरो योशिदा ने इस साझेदारी को "व्यापार से परे, आपसी सम्मान और साझा महत्वाकांक्षा पर आधारित सच्ची साझेदारी" बताया।

इफको–एमसी के निदेशक डॉ. आर. पी. सिंह ने कहा कि पिछले दस साल से एक ब्रांड बने हुए है। हम मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के मजबूत सहयोग से किसानों का विश्वास जीत रहे हैं।

चेयरमैन राकेश कपूर ने कहा, "नवीन ऊर्जा के साथ कंपनी आने वाले दशक में और तेजी से आगे बढ़ेगी। हमारा लक्ष्य नए अणुओं (मॉलिक्यूल्स) और टिकाऊ समाधानों के साथ अपनी पोर्टफोलियो को और सशक्त करना है।"

आभार और भविष्य की प्रतिबद्धता

वोट ऑफ थैंक्स देते हुए संयुक्त सीईओ रोहित चोपड़ा ने कहा, "आज का दिन एक दशक की समर्पण, विकास और उत्कृष्टता का प्रतीक है। हम इस यात्रा का हिस्सा रहे सभी लोगों के प्रति आभारी हैं और आने वाले वर्षों में और भी गहन प्रभाव छोड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

अंत में कंपनी ने दोहराया कि वह किसानों को भरोसेमंद, गुणवत्तापूर्ण और नवोन्मेषी फसल संरक्षण एवं पोषण समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। टिकाऊ कृषि समाधानों, नई तकनीक और मजबूत साझेदारियों के बल पर इफको–एमसी अगले दशक में सफलता की नई इबारत लिखने को तैयार है।

इंसेक्टिसाइड्स (इंडिया) लिमिटेड ने कॉर्टेवा एग्रीसाइंस के साथ साझेदारी कर ''स्पार्कल'' कीटनाशक लॉन्च किया

फसल सुरक्षा को मजबूत करने और भारतीय किसानों को अत्याधुनिक कृषि समाधानों से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, भारत के फसल सुरक्षा और पोषण उद्योग में अग्रणी कंपनी, इंसेक्टिसाइड्स (इंडिया) लिमिटेड (आईआईएल) ने कृषि नवाचार में वैश्विक अग्रणी, कॉर्टेवा एग्रीसाइंस के साथ मिलकर ''स्पार्कल'' लॉन्च करने की घोषणा की है। स्पार्कल एक व्यापक–स्पेक्ट्रम कीटनाशक है जिसका उद्देश्य ब्राउन प्लांट हॉपर (बीपीएच) की समस्या का समाधान करना और चावल की पैदावार में सुधार करना है। कॉर्टेवा के उन्नत रसायन विज्ञान और आईआईएल की व्यापक पहुँच और किसान–संबंध के साथ डिजाइन किया गया, स्पार्कल का उद्देश्य किसानों को फसल की पैदावार, गुणवत्ता और लाभप्रदता में सुधार करने में मदद करना है।

इस अवसर पर बोलते हुए, इंसेक्टिसाइड्स (इंडिया) लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, राजेश अग्रवाल ने कहा, कॉर्टेवा एग्रीसाइंस के साथ हमारा सहयोग, दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कृषि तकनीकों को भारतीय खेतों तक पहुँचाने की आईआईएल की प्रतिबद्धता में एक और मील का पत्थर है। स्पार्कल के साथ, हम किसानों को एक नवीनतम तकनीक वाला विश्वसनीय समाधान प्रदान कर रहे हैं जो उनकी चावल की फसल को बीपीएच से बचाने में मदद करता है, जो समय रहते नियंत्रित न किए जाने पर खतरनाक हो सकता है। हम इस सहयोग से और अधिक समाधानों की आशा करते हैं।

मुख्य विपणन अधिकारी, दुष्यंत सूद ने कहा, आईआईएल में, हम अपने अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) और सहयोग के माध्यम से किसान–केंद्रित नवाचारों और स्थायी समाधानों को आगे बढ़ाने पर केंद्रित हैं। हमारे आईआईएल चावल फसल समाधान में स्पार्कल को शामिल करने से यह निश्चित रूप से और अधिक मजबूत होगा। हम सभी भौगोलिक क्षेत्रों के किसानों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और विभिन्न फसलों के पोर्टफोलियो में नवीनतम तकनीक को उनके पास लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस लॉन्च के साथ, आईआईएल और कॉर्टेवा एग्रीसाइंस विज्ञान–समर्थित, प्रदर्शन–उन्मुख और किसान–अनुकूल फसल सुरक्षा समाधान प्रदान करके भारतीय कृषि में बदलाव लाने के लिए अपनी संयुक्त प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

एसआरएफ कृषि–रसायन, बीओपीपी फिल्म संयंत्र स्थापित करने के लिए लगभग 750 करोड़ रुपये का निवेश करेगा

रासायनिक कंपनी एसआरएफ लिमिटेड अपनी विस्तार योजना के तहत गुजरात में एक कृषि–रसायन संयंत्र और इंदौर में एक बीओपीपी फिल्म निर्माण संयंत्र स्थापित करने के लिए लगभग ₹750 करोड़ का निवेश करेगी। गुरुग्राम स्थित एसआरएफ लिमिटेड का विविध व्यवसाय है जिसमें फ्लोरोकेमिकल्स, विशेष रसायन, प्रदर्शन फिल्म और पन्नी, तकनीकी वस्त्र, और लेपित एवं लेमिनेटेड कपड़े शामिल हैं। कंपनी के बोर्ड ने गुजरात के दाहेज में ₹250 करोड़ की लागत से कृषि–रसायन उत्पादन हेतु एक संयंत्र स्थापित करने को मंजूरी दी। दाहेज स्थित यह संयंत्र प्रति वर्ष 12,000 टन कृषि–रसायन मध्यवर्ती का उत्पादन करेगा। नवीनतम नियामक फाइलिंग के अनुसार, यह परियोजना 18 महीनों में पूरी हो जाएगी। बोर्ड ने इंदौर में एक बीओपीपी (बाइसियली ओरिएंटेड पॉलीप्रोपाइलीन) फिल्म निर्माण सुविधा स्थापित करने के लिए ₹490 करोड़ के निवेश को भी मंजूरी दी, जिसमें अत्याधुनिक 10.4 मीटर चौड़ी ब्रुकनर फिल्म लाइन और एक मेटालाइजर शामिल है। इस परियोजना के 24 महीनों में पूरा होने की उम्मीद है।

एसआरएफ लिमिटेड ने चालू वित्त वर्ष की अप्रैल–जून अवधि के दौरान अपने समेकित शुद्ध लाभ में 71 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है, जो एक वर्ष पहले की समान अवधि के 252.22 करोड़ से बढ़कर ₹432.32 करोड़ हो गया। इस वित्त वर्ष की पहली तिमाही के दौरान परिचालन से आय 10 प्रतिशत बढ़कर ₹3,818.62 करोड़ हो गई, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में ₹3,464.12 करोड़ थी। एसआरएफ के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आशीष भारत राम ने कहा कि कमजोर गर्मियों और मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद, इस साल की शुरुआत अच्छी रही है। हम शेष वर्ष के लिए सतर्क और आशावादी बने हुए हैं। हमारी पूंजीगत व्यय योजनाएँ मजबूत बनी हुई हैं। वित्त वर्ष 2024–25 में, एसआरएफ लिमिटेड ने ₹14,825.79 करोड़ की कुल आय पर ₹1,251 करोड़ का समेकित शुद्ध लाभ अर्जित किया।

CHARMINAR
birlanu

BUILD YOUR
WORLD

अल्ट्राकूल फाइबर
सीमेंट रूफ

तापमान 8°C* तक कम करे
सोलर रिफ्लेक्टेंस इंडेक्स (SRI) 99**
ज़्यादा मज़बूत और टिकाऊ

1800 425 425 99 | customer.care@birlanu.com | www.birlanu.com

*SRI और अंदर के तापमान में कमी बाहर के तापमान के अनुसार बदल सकती है। **भारत के प्रतिष्ठित भवन विज्ञान एवं तकनीकी शोध प्रयोगशाला में परीक्षित।

कोरोमंडल इंटरनेशनल ने एनएसीएल इंडस्ट्रीज लिमिटेड में 53% नियंत्रण हिस्सेदारी का अधिग्रहण पूरा किया

भारत की अग्रणी कृषि समाधान प्रदाता और मुरुगप्पा समूह की कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड ने NACL इंडस्ट्रीज लिमिटेड में प्रमोटर शेयरधारिता के अधिग्रहण हेतु शेयर खरीद समझौते (SPA) के सफल समापन की घोषणा की। इस लेनदेन के साथ, कोरोमंडल ने औपचारिक रूप से NACLL में 53% की नियंत्रक हिस्सेदारी हासिल कर ली है। सेबी अधिग्रहण विनियमों के तहत सार्वजनिक शेयरधारकों से 26% तक अतिरिक्त हिस्सेदारी हासिल करने के लिए चल रहा खुला प्रस्ताव अभी प्रक्रियाधीन है और निर्धारित नियामक समय–सीमा का पालन करेगा। 53% हिस्सेदारी अधिग्रहण के बाद, नटराजन श्रीनिवासन, एस. शंकरसुब्रमण्यन और डॉ. रघुराम देवरकोंडा आज NACL इंडस्ट्रीज के बोर्ड में शामिल हो गए।

इसके अलावा, NACL इंडस्ट्रीज लिमिटेड के बोर्ड ने अपनी बैठक में डॉ. रघुराम देवरकोंडा को प्रबंध निदेशक और सीईओ के रूप में नियुक्त करने को मंजूरी दी। इससे पहले, वह कोरोमंडल में फसल सुरक्षा, जैव उत्पाद और खुदरा व्यवसायों के कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत थे और अपने साथ व्यापक नेतृत्व अनुभव और मूल्य श्रृंखला में गहन विशेषज्ञता लेकर आए हैं।

इस घटनाक्रम पर टिप्पणी करते हुए, कोरोमंडल इंटरनेशनल के कार्यकारी अध्यक्ष, अरुण अलगप्पन ने कहा कि हमें कोरोमंडल और बड़े मुरुगप्पा परिवार में एनएसीएल इंडस्ट्रीज लिमिटेड का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। यह अधिग्रहण कृषि समाधान क्षेत्र में हमारी उपस्थिति बढ़ाने के हमारे दीर्घकालिक रणनीतिक रोडमैप के अनुरूप है। नई नेतृत्व टीम के साथ, हमें विश्वास है कि एनएसीएल नवाचार और विकास की अपनी यात्रा को गति देगा।

जीईएसी ने मक्का, कपास और अरहर के सीमित क्षेत्र परीक्षण करने की मंजूरी दी

बायर क्रॉप साइंस को भारत भर के कई राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) संस्थानों में शाकनाशी प्रतिरोधी मक्का NK603 और कीट प्रतिरोधी मक्का MON89034 के अलग–अलग सीमित क्षेत्र परीक्षण करने की मंजूरी मिल गई है। यह मंजूरी 9 जून, 2025 को जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC) की 155वीं बैठक के दौरान दी गई।

GEAC बैठक के कार्यवृत्त के अनुसार, सीमित क्षेत्र परीक्षणों का उद्देश्य है–

- ग्लाइफोसेट पोटेशियम लवण के प्रयोग से NK603 की खरपतवार नियंत्रण प्रभावकारिता का परीक्षण करना।
- लक्ष्य लेपिडोप्टेरान कीटों के विरुद्ध MON89034 संकर की प्रभावकारिता का अध्ययन करना।
- लाभकारी कीटों और कीटों पर ट्रांसजेनिक संकरों के प्रभाव का अवलोकन करना।
- मृदा पारिस्थितिकी तंत्र, खरपतवार, आकारिकी और लक्षणप्ररूपी लक्षणों में ट्रांसजेनिक मक्का घटनाओं और उनके पारंपरिक समकक्ष संकरों के प्रभाव की तुलना करना।
- पौधों के ऊतकों में ट्रांसजेनिक जीन द्वारा कोडित प्रोटीनों की अभिव्यक्ति के स्तर को नियमित अंतराल पर रिकॉर्ड करना और
- ट्रांसजेनिक मक्का संकरों और उनके गैर–ट्रांसजेनिक समकक्षों के कृषि संबंधी लाभों में अंतर करना।
- रासी सीड्स प्राइवेट लिमिटेड को ट्रांसजेनिक कपास RIRC304 और RIRC–304×MON15985 के लिए, और ICAR–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान को फली छेदक प्रतिरोधी चार ट्रांसजेनिक अरहर किस्मों के लिए क्षेत्र परीक्षण करने की भी मंजूरी दी गई।

Saffire
GROW TOGETHER
यूनियन
"मारे मंडूसी जमके, पूरा खेत चमके"
सही है
मात्राः 60 ग्राम प्रति एकड़
Powered by Crystal
PYROXASULFONE 85% WG
UNION™
यूनियन
Herbicide
Saffire
आइये बढ़ें
सबके साथ, एक साथ

ट्रॉपिकल एग्रो ने सेब और ताजा उपज के लिए स्मार्टफ्रेश™ इनबॉक्स का विस्तार किया

ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, स्मार्टफ्रेश™ इनबॉक्स के दायरे का विस्तार कर रही है। यह एग्रोफ्रेश इंक., अमेरिका द्वारा विकसित एक कटाई–पश्चात तकनीक है। इस समाधान का उद्देश्य भंडारण और परिवहन के दौरान फलों और सब्जियों की शेल्फ लाइफ बढ़ाकर भारत में कटाई–पश्चात होने वाले बड़े नुकसान को कम करना है।

भारत में हर साल फलों और सब्जियों के क्षेत्र में कटाई–पश्चात 30% से अधिक का नुकसान होता है। स्मार्टफ्रेश™ इनबॉक्स परिवहन के दौरान ताजगी की सुरक्षा प्रदान करके इस समस्या का समाधान करता है। यह नवाचार 1–मिथाइलसाइक्लोप्रोपीन (1–MCP) पर आधारित है, जो एक पादप वृद्धि नियामक है जो फलों के पकने और खराब होने के लिए जिम्मेदार प्राकृतिक हार्मोन एथिलीन को रोककर पकने में देरी करता है। ट्रॉपिकल एग्रो भारत में 1–MCP तकनीक का उपयोग करने के लिए लाइसेंस प्राप्त एकमात्र कंपनी है।

इस पाउच–आधारित उत्पाद का उपयोग करना आसान है–बस इसे खेत में, नियंत्रित वातावरण में भंडारण, बंदरगाहों या परिवहन के दौरान पैक किए गए उत्पाद के डिब्बों में रखें। इससे उपज की तत्काल सुरक्षा और परिवहन सुनिश्चित होता है, देरी कम होती है और बर्बादी कम होती है। यद्यपि भारत में इसे वर्तमान में सेब के लिए अनुमोदित किया गया है, अन्य फलों और सब्जियों के लिए भी इसके क्षेत्र परीक्षण चल रहे हैं। वैश्विक स्तर पर, स्मार्टफ्रेश™ इनबॉक्स सेब, नाशपाती, आलूबुखारा, कीवी, टमाटर, ब्रोकली, खरबूजे और तरबूज जैसी फसलों पर सफल साबित हुआ है। इसने अंगूर, अमरूद, चीकू, अनार और कस्टर्ड एप्पल पर भी आशाजनक परिणाम दिखाए हैं। ताजगी बढ़ाने के अलावा, यह तकनीक परिचालन संबंधी लाभ भी प्रदान करती है जैसे कोल्ड स्टोरेज पर निर्भरता कम करना, स्थान दक्षता को अधिकतम करना, और ऊर्जा उपयोग और कार्बन उत्सर्जन में कटौती करके स्थिरता को बढ़ावा देना। ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के महाप्रबंधक – पोस्ट हार्वेस्ट बिजनेस, के. वेंकटसुब्रमण्यन ने कहा, एग्रोफ्रेश के साथ यह साझेदारी हमारे किसानों और कृषि आपूर्ति श्रृंखला को एक विश्वसनीय, स्केलेबल ताजगी समाधान प्रदान करती है जिससे संसाधनों का अनुकूलन और अधिकतम लाभ प्राप्त करने में मदद मिलती है।

पंजाब केमिकल्स निर्यात बाजार के लिए नए उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा

कृषि रसायनों और विशिष्ट रसायनों के अग्रणी भारतीय निर्माता और वैश्विक आपूर्तिकर्ता, पंजाब केमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड ने उच्च मूल्य वाले कृषि रसायन उत्पादों और मध्यवर्ती उत्पादों के लिए विदेशी ग्राहकों के साथ तीन विशेष समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की है। कंपनी अगले 12–18 महीनों में इन उत्पादों का व्यावसायीकरण करने की योजना बना रही है।

कंपनी ने अपने मौजूदा संयंत्र में दो नए विनिर्माण ब्लॉक बनाने के लिए लगभग 60 करोड़ रुपये के रणनीतिक निवेश की योजना बनाई है। इस विस्तार का उद्देश्य मौजूदा उत्पादों की बढ़ती माँग, नए उत्पाद पाइपलाइन और जापानी तथा यूरोपीय बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले नए उत्पादों का व्यावसायीकरण करना है। कंपनी को इस विस्तार के लिए पहले से ही पर्यावरणीय स्वीकृति प्राप्त है।

यह रणनीतिक पहल अगले दो वर्षों में सामने आएगी और इससे कंपनी की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। पंजाब केमिकल्स का लक्ष्य अगले दो से तीन वर्षों में इस क्षेत्र से लगभग 120–150 करोड़ रुपये की बिक्री बढ़ाना है।

इस विकास के अलावा, कंपनी अपने बढ़ते परिचालन और उत्पाद पाइपलाइन को सहयोग देने के लिए एक नई साइट की सक्रिय रूप से तलाश कर रही है। नई साइट के बारे में औपचारिक घोषणा समय आने पर की जाएगी।

इस विकास पर टिप्पणी करते हुए, प्रबंधन निदेशक शालिल श्रॉफ ने कहा कि हमें अपने उत्पाद विकास, अनुसंधान एवं विकास और बाजार पहुँच प्रयासों की सफलता पर खुशी है। गुणवत्ता, बौद्धिक संपदा और वितरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता बहुत से नए ग्राहकों को आकर्षित कर रही है और मेरा मानना है कि यह विकास और उत्कृष्टता की ओर हमारी यात्रा में एक नए रोमांचक चरण की शुरुआत है।

यूपीएल ने मक्का की फसल के लिए नया खरपतवारनाशक 'ब्रुशिया' लॉन्च किया

यूपीएल सस्टेनेबल एग्री सॉल्यूशंस ने ब्रुशिया लॉन्च किया है, जो भारत में मक्का की फसल के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया एक नया पोस्ट–इमर्जेंट हर्बिसाइड है। ब्रुशिया भारतीय मक्का किसानों को लगातार पनपने वाले और प्रतिरोधी खरपतवारों से निपटने के लिए एक शक्तिशाली, सुरक्षित और कुशल समाधान प्रदान करेगा। कंपनी ने इस उत्पाद को कर्नाटक के प्रमुख चौनल भागीदारों की उपस्थिति में लॉन्च किया। ब्रुशिया सभी प्रमुख मक्का उत्पादक जिलों में डीलरों और वितरकों के माध्यम से किसानों के लिए उपलब्ध होगा।

ब्रुशिया 2 से 4 खरपतवार पत्ती अवस्था पर 50 मिली प्रति एकड़ की कम खुराक पर चौड़ी पत्ती वाले और घास वाले खरपतवारों की एक विस्तृत श्रृंखला के खिलाफ त्वरित नियंत्रण प्रदान करता है। कम मानवीय प्रयास और शुरुआती विकास चरण के दौरान बेहतर सुरक्षा के साथ, ब्रुशिया मक्का किसानों को बेहतर उत्पादकता और कृषि लाभप्रदता के लिए एक स्मार्ट समाधान प्रदान करता है। यह उत्पाद लागत–प्रभावी और समय बचाने वाली खरपतवार प्रबंधन पद्धति की तलाश कर रहे मक्का उत्पादकों के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव साबित होने की उम्मीद है।

लॉन्च पर बोलते हुए, हर्बिसाइड्स पोर्टफोलियो लीड, बिस्वजीत बोरा ने कहा कि हमें ब्रुशिया को पेश करते हुए गर्व हो रहा है, जो एक अगली पीढ़ी का हर्बिसाइड है जिसे विशेष रूप से मक्का किसानों के सामने आने वाली बढ़ती चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित किया गया है। खरपतवार प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि और बदलती जलवायु परिस्थितियों के साथ, ब्रुशिया एक विश्वसनीय, लागत प्रभावी और उपयोग में आसान समाधान प्रदान करता है जो किसानों को सबसे महत्वपूर्ण शुरुआती विकास चरणों के दौरान अपनी फसलों की सुरक्षा करने में सक्षम बनाता है।

दक्षिण और पूर्व के बिजनेस हेड, जगदीश यरनेनी ने कहा कि शुरुआती लॉन्च तमिलनाडु और कर्नाटक पर केंद्रित है, हम दक्षिण भारत में व्यापक फसल चुनौतियों को समझते हैं और दक्षिणी बेल्ट के कई और जिलों तक पहुँचने की योजना बना रहे हैं। इस क्षेत्र के छोटे किसानों की आजीविका पर जलवायु परिवर्तन और फसल हानि के गहन प्रभाव को समझते हुए, यूपीएल सस्टेनेबल एग्री सॉल्यूशंस अभिनव फसल सुरक्षा समाधान पेश करके सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध है।

यूपीएल बागवानी फसलों के लिए प्लांट हेल्थ एलिसिटर लॉन्च करेगी

फसल सुरक्षा निर्माता कंपनी यूपीएल को शरद ऋतु में एक नए अवशेष और कटाई–अंतराल–मुक्त रोग नियंत्रण विकल्प के लिए पंजीकरण मिलने की उम्मीद है। बीईटी07 का पंजीकरण शीर्ष फल, कोमल फल, बेलों, फलियों और संरक्षित पत्तेदार सलाद पर लागू होगा ताकि पाउडरी फफूंदी, डाउनी फफूंदी, बोट्राइटिस और स्कैब सहित कई प्रकार की बीमारियों को नियंत्रित किया जा सके।

बीईटी07 पौधों की प्राकृतिक सुरक्षा को उत्तेजित करके रोगों को नियंत्रित करता है। यूपीएल के तकनीकी सेवाओं के प्रमुख स्टुअर्ट जैक्सन के अनुसार, इसका सक्रिय घटक लैमिनारिन है, जो अनाज की फसलों में एक स्थापित और तेजी से लोकप्रिय पादप स्वास्थ्य उत्तेजक बन गया है, जिसे आयोडस ब्रांड नाम से बेचा जाता है। जैक्सन ने बताया कि लैमिनारिन कवक के हमले से निकलने वाले विघटित कोशिकीय पदार्थ की नकल करता है। कई जैव रासायनिक मार्ग सक्रिय होते हैं, जो आस–पास की कोशिकाओं की रक्षा प्रणालियों को उत्तेजित करते हैं। कवक रोगजनक के हमले से पहले लैमिनारिन का प्रयोग करने से पौधा वास्तविक संक्रमण के लिए तैयार हो जाता है। यह बारहमासी फसलों में 7–10 दिनों तक चलने वाली त्वरित और तीव्र प्रतिक्रिया प्रदान करता है।

यूपीएल परीक्षणों से पता चला है कि BET07, सेब की पपड़ी, चूर्णी फफूंदी और बोट्राइटिस जैसी प्रमुख बीमारियों पर पारंपरिक कवकनाशी और जैव कवकनाशी के समान ही रोग नियंत्रण स्तर प्राप्त करता है। जैक्सन ने कहा कि पारंपरिक कवकनाशी के साथ मिलाने पर, यह रोग नियंत्रण और विपणन योग्य उपज को और बढ़ावा देता है।

उन्होंने आगे कहा कि BET07 के कुछ प्रमुख लाभ इसके उपयोग में लचीलापन हैं। एक बार अनुमोदित होने के बाद, यह उम्मीद की जाती है कि लेबल पर कोई कटाई अंतराल नहीं होगा, और यूपीएल ने पाया है कि इसकी लाभकारी प्रोफाइल उत्कृष्ट है। कंपनी को यह भी उम्मीद है कि इसे जैविक प्रमाणन प्राप्त होगा।

एफएमसी इंडिया का वाणिज्यिक कारोबार बिक्री के लिए तैयार

एफएमसी कॉर्पोरेशन ने देश में चल रही वित्तीय चुनौतियों और लंबे समय से जारी बाजार मंदी के बीच अपने भारतीय वाणिज्यिक कारोबार को बेचने के फैसले की घोषणा की है। यह कदम भारत में सुस्त नकदी प्रवाह और लगातार स्टॉक कम होने से जूझ रही एक कठिन तिमाही के बाद, परिचालन को सुव्यवस्थित करने और अधिक लाभदायक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक व्यापक रणनीतिक बदलाव का हिस्सा है। कंपनी ने एशिया में साल–दर–साल 17% राजस्व में गिरावट दर्ज की, जो भारत में लगातार कम होती मात्रा और कम कीमतों के कारण हुई। भारत में यह सुस्त माँग, लागत–प्लस अनुबंधों और मुद्रा की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण कीमतों पर दबाव, एफएमसी के नेतृत्व के लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

परिणामस्वरूप, एफएमसी के निदेशक मंडल ने अपने भारतीय वाणिज्यिक व्यवसाय की बिक्री को मंजूरी दे दी है, जिसमें इसके जमीनी बिक्री और विपणन संचालन शामिल हैं। हालाँकि, कंपनी अंतिम खरीदार के साथ एक आपूर्ति समझौते के माध्यम से भारत में अपनी रणनीतिक उपस्थिति बनाए रखने की योजना बना रही है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसके पेटेंट प्राप्त अणु–अगली पीढ़ी की डायमाइड प्रौद्योगिकियों और जैविक उत्पादों सहित भारतीय बाजार में सुलभ रहें। विशेष रूप से, एफएमसी भारत में अपनी विनिर्माण उपस्थिति बनाए रखेगी, जो कि लागत–प्रभावी उत्पादन आधार के रूप में देश के महत्व को दर्शाता है, भले ही वह प्रत्यक्ष वाणिज्यिक जुड़ाव को कम कर रही हो।

कंपनी ने स्पष्ट किया कि भारत के वाणिज्यिक व्यवसाय को 2025 की तीसरी तिमाही से बिक्री के लिए रखा जाएगा। हालाँकि भारत से होने वाले राजस्व को अभी भी शीर्ष–पंक्ति आँकड़ों में दर्शाया जाएगा, लेकिन इसे समायोजित EBITDA और समायोजित EPS जैसे भविष्य–उन्मुख आय मीट्रिक से बाहर रखा जाएगा। FMC ने 2025 के अपने पूरे वर्ष के मार्गदर्शन की पुष्टि की है, लेकिन राजस्व अनुमानों में अब भारत को शामिल नहीं किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप अनुमानित सीमा +4.08 से +4.28 बिलियन है, जो 2024 के मध्य बिंदु की तुलना में 2% कम है।

सुमिल केमिकल्स ने भारत में चार नए उत्पाद लॉन्च किए

सुमिल केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड ने हाल ही में भोपाल में एक व्यावसायिक साझेदार सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें फसल उत्पादकता और किसानों की लाभप्रदता बढ़ाने के उद्देश्य से चार नए कृषि उत्पादों का अनावरण किया गया।

इस कार्यक्रम में, कंपनी ने अपने फसल संरक्षण और पोषण पोर्टफोलियो के अंतर्गत चार नए उत्पाद – ग्रैनुलम, वर्डेना, न्यूट्रोब और स्पैनो – आधिकारिक तौर पर लॉन्च किए।

वितरक को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए, निदेशक श्रीमती कोमल ने भारतीय किसानों को किफायती दामों पर विश्वस्तरीय उत्पाद उपलब्ध कराने की कंपनी की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने इन नवाचारों को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में वितरकों की भूमिका की सराहना की और सुमिल के विकास में उनके निरंतर सहयोग की सराहना की। भोईर ने सुमिल केमिकल्स की यात्रा का अवलोकन किया और भविष्य के लिए कंपनी के रणनीतिक दृष्टिकोण को साझा किया। पटेल ने नए लॉन्च किए गए उत्पादों की बाजार क्षमता और व्यावसायिक दृष्टिकोण पर चर्चा की, और बताया कि वितरक व्यावसायिक सफलता के लिए इनका कैसे लाभ उठा सकते हैं।

इन नए लॉन्च के साथ, सुमिल केमिकल्स का लक्ष्य फसल इनपुट उद्योग में अपनी स्थिति को मजबूत करना और भारतीय किसानों को प्रभावी, सुरक्षित और नवीन समाधानों के साथ समर्थन प्रदान करना है।

लॉन्च कार्यक्रम में कंपनी के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया, जिनमें प्रकाश भोईर (मुख्य व्यवसाय प्रमुख), एन.बी. पटेल (एवीपी – बिक्री एवं विपणन), बिक्रमजीत साहा (सीएमओ – फसल पोषण), रवीश सिंह (वरिष्ठ महाप्रबंधक – फसल पोषण एवं जैविक), अनिरुद्ध यादव (क्षेत्रीय प्रबंधक), कल्पकांत पवार (वरिष्ठ पोर्टफोलियो प्रबंधक), प्रभु लेंका (उत्पाद प्रबंधक – कीटनाशक), मेघा गिन्नारे (उत्पाद प्रमुख), और रोहित सक्सेना (विपणन प्रबंधक) शामिल थे। इस बैठक में क्षेत्र भर से बड़ी संख्या में वितरकों ने भी भाग लिया।

आरएमपीसीएल की रिटेलर्स मीटिंग आगरा में संपन्न

आरएमपीसीएल (आर. एम. फॉस्फेट्स एंड केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड) एक भारतीय कंपनी है जो उर्वरकों, पशु आहार और अन्य कृषि उत्पादों के उत्पादन और विपणन में लगी हुई है। कंपनी फसलों और पशुधन दोनों के लिए उच्च–गुणवत्ता वाले पोषक तत्व उपलब्ध कराने पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य कृषि उत्पादकता और ग्रामीण आजीविका में सुधार लाना है।

इसी कड़ी में कंपनी ने आगरा में एक बड़ी रिटेलर्स मीटिंग का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। बैठक के दौरान, जिरॉन पावरप्लस समेत कई उत्पादों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की गई।

कंपनी के प्रमुख कृषि विशेषज्ञ प्रमोद कुमार पांडेय, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक संजय जैन ने बैठक में पश्चिमी उत्तर प्रदेश टीम के सदस्यों को संबोधित करते हुए कंपनी के प्रोफाइल के बारे जानकारी दी और उत्पाद रेंज की प्रमुख विशेषताओं और लाभों के बारे में बताया।

उन्होंने आगामी सीजन में आलू की फसलों के लिए उचित पोषक तत्वों और फसल देखभाल कार्यक्रम पर भी प्रकाश डाला, जिसकी रिटेलर्स ने खूब सराहना की। बैठक में 129 रिटेलर्स और 3 डीलरों ने भाग लिया।

गोदरेज एग्रोवेट ने मक्का की फसलों के लिए एक नया शाकनाशी, अशिताका लॉन्च किया

भारत के अग्रणी विविध कृषि व्यवसायों में से एक, गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड (गोदरेज एग्रोवेट) ने मक्का की फसलों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया एक नया शाकनाशी लॉन्च किया है। आईएसके जापान के सहयोग से विकसित 'अशिताका' एक अभिनव समाधान है जो घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण प्रदान करता है, जो भारत में मक्का किसानों के सामने एक बड़ी चुनौती है। विशेष रूप से शुरुआती विकास चरणों के दौरान खरपतवार का संक्रमण, मक्का की उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जब 2–4 खरपतवार पत्ती चरण में प्रयोग किया जाता है, तो अशिताका प्रभावी खरपतवार नियंत्रण प्रदान करता है।

लॉन्च के अवसर पर, गोदरेज एग्रोवेट के फसल संरक्षण व्यवसाय के सीईओ, राजावेलु एनके ने कहा कि गोदरेज एग्रोवेट में, हमारा मिशन ऐसे नवोन्मेषी, शोध–आधारित समाधान प्रदान करना है जो भारतीय किसानों को सशक्त बनाएँ और पर्यावरणीय व बाजार की चुनौतियों से कृषि को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाकर कृषक परिवारों का उत्थान करें। मक्का किसानों के लिए बेहतर उत्पादकता प्राप्त करने हेतु फसल वृद्धि के शुरुआती चरणों में प्रभावी खरपतवार प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में अपनी तरह का पहला, अशिताका का शुभारंभ, किसानों को उपज में सुधार और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली समाधान प्रदान करने की दिशा में एक कदम है।

अनिल चौबे, महाप्रबंधक – विपणन, फसल संरक्षण व्यवसाय, गोदरेज एग्रोवेट ने कहा कि मक्के में अशिताका का प्रभावी खरपतवार नियंत्रण फसल–खरपतवार प्रतिस्पर्धा को कम करता है, सीमित मिट्टी की नमी और पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग करने में सक्षम बनाता है, और फूल आने और दाने भरने जैसी महत्वपूर्ण अवस्थाओं के दौरान पौधों के स्वास्थ्य को बनाए रखता है। अनुशंसित खुराक– 2–4 खरपतवार पत्ती अवस्था पर 400 मिली/एकड़ सर्फेक्टेंट के साथ 50 मिली/एकड़, खरपतवारों को जल्दी नियंत्रित करने में मदद करती है और खरपतवार से संबंधित उपज हानि को कम करने में भी सहायक होती है, जो मौसम के दबाव में और भी बदतर हो जाती है। इससे उत्पादन में स्थिरता, अनाज की गुणवत्ता में सुधार और आय में उतार–चढ़ाव के खिलाफ एक मजबूत सुरक्षा मिलती है।

साक्षात्कार

किसानों को बीज से बाजार तक समाधान देने का लक्ष्य -श्याम सुंदर सिंह

भारत में कृषि क्षेत्र हमेशा से चुनौतियों और संभावनाओं से भरा रहा है। डिजिटल तकनीक और नए नवाचारों के आने से खेती के तरीकों में बदलाव तो आया है, लेकिन किसानों तक सही समय पर सही समाधान पहुंचाना अभी भी बड़ी आवश्यकता है। इसी सोच के साथ 2012 में बिहार से 'देहात' की शुरुआत हुई, जिसका उद्देश्य किसानों को एक ही प्लेटफॉर्म पर बीज से लेकर बाजार तक सभी सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

इस विशेष साक्षात्कार में हमने देहात के संस्थापक श्याम सुंदर सिंह से उनकी यात्रा, चुनौतियों, डिजिटल एग्रीकल्चर के भविष्य और किसानों के लिए उनके संदेश के बारे में विस्तार से चर्चा की।

'देहात' की शुरुआत कब और कैसे हुई?

देहात की शुरुआत 2012 में बिहार से हुई। उस समय हमने महसूस किया कि किसानों को एक ऐसा प्लेटफॉर्म चाहिए, जहाँ बीज, उर्वरक, फसल सुरक्षा समाधान, पशु आहार, मशीनरी, कृषि से जुड़ी जानकारी, ऋण सुविधा और उनके उत्पाद को सही बाजार तक पहुंचाने का जरिया सब कुछ एक ही जगह पर उपलब्ध हो। इसी सोच से हमने देहात शुरू किया और आज भी हम इन्हीं तीन स्तंभों कृषि इनपुट, जानकारी, और मार्केट एक्सेस पर काम कर रहे हैं।

इस सफर में आपके सामने सबसे बड़ी चुनौतियां क्या रहीं?

कृषि क्षेत्र खुद में काफी चुनौतीपूर्ण है। सबसे बड़ी चुनौती है किसानों और उनकी जरूरतों को गहराई से समझना, क्योंकि भारत में अनेक फसलें, अलग–अलग एग्रो–क्लाइमेटिक जोन और विविध किसान प्रोफाइल हैं। हर वैल्यू चेन के अपने अलग चैलेंज और अवसर होते हैं। यह सफर हमारे लिए एक सीखने की प्रक्रिया रहा है। आज हम 11 राज्यों में काम कर रहे हैं और 2.5 मिलियन किसानों से जुड़े हैं। फिर भी, हम रोज नई चीजें सीख रहे हैं और कुछ नया करने की कोशिश कर रहे हैं।

आने वाले पाँच वर्षों में आप डिजिटल एग्रीकल्चर का भविष्य कैसे देखते हैं?

पिछले कुछ वर्षों में कृषि में डिजिटल बदलाव तेजी से हुए हैं। यदि हम कोविड से पहले की बात करें, तो किसानों में स्मार्टफोन उपयोग करने वालों की संख्या करीब 30% थी। आज यह आंकड़ा लगभग 95% है। अब चुनौती यह है कि किसान स्मार्टफोन का सही इस्तेमाल उत्पादकता बढ़ाने के लिए करें। मेरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में किसानों का डिजिटल टूल्स का उपयोग और बढ़ेगा। जेनेरेटिव AI, सोशल मीडिया मार्केटिंग और अन्य नई तकनीकें किसानों के साथ संवाद को आसान और प्रभावी बनाएंगी।

'देहात' का वर्तमान एक्शन प्लान किसानों को कैसे लाभ पहुंचाएगा?

हम कृषि वैल्यू चेन के दोनों छोर पर काम करते हैं—बैक एंड और मार्केटिंग दोनों में। हम वैश्विक बाजार में भारतीय फसलों की बढ़ती मांग पर नजर रखते हैं और उसी के अनुसार किसानों के साथ मिलकर उत्पाद को कस्टमाइज करते हैं। फिर उसे वैल्यू ऐड करके बाजार में उतारते हैं। हमारा लक्ष्य है कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद के लिए अधिक से अधिक कीमत मिल सके और ग्राहक को बेहतरीन गुणवत्ता उपलब्ध हो।

आपके अनुसार कृषि क्षेत्र में सबसे बड़ा अवसर और चुनौती क्या है?

सबसे बड़ी चुनौती है लगातार सीखना और नई तकनीकों को अपनाना। लेकिन यही इस क्षेत्र का सबसे बड़ा अवसर भी है। तकनीक और नवाचार किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, बशर्ते किसान उन्हें अपनाने के लिए तैयार रहें।

'फसल क्रांति' के माध्यम से आप किसानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं किसानों से यही कहना चाहूंगा कि कृषि में चुनौतियां बहुत हैं, लेकिन समाधान भी हैं। नई तकनीक और नवाचारों को अपनाइए, लेकिन पहले उन्हें अपने खेत के एक छोटे हिस्से में डेमो के रूप में आजमाइए। यदि वह सफल हो, तो पूरे खेत में अपनाइए। इस तरह आप जोखिम कम करके अपनी उत्पादकता और आय दोनों बढ़ा सकते हैं।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

कैप्सबर एग्रीसाइंस जैविक कृषि में क्रांति लाने का मिशन - मनोज कुमार रूपा

भारत कृषि और खेती के तौर–तरीके़ बदलाव के दौर से गुज़र रहे है, जहां जैविक एवं बायोलॉजिकल कृषि समाधान किसानों के लिए नई संभावनाएं खोल रहे हैं। इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रही है कैप्सबर एग्रीसाइंस, जिसने अपने शोध, नवाचार और किसानों तक बेहतर तकनीक पहुंचाने के मिशन से देश और विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई है।

इस विशेष साक्षात्कार में, हमने बात की कैप्सबर एग्रीसाइंस के प्रबंध निदेशक मनोज कुमार रूपा से, जिन्होंने कंपनी की यात्रा, उद्देश्यों, इफको के साथ साझेदारी और भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की।

कैप्सबर एग्रीसाइंस किसानों के लिए कैसे कार्य कर रही है?

कैप्सबर एग्रीसाइंस की स्थापना वर्ष 2017 में हुई थी। हम चार साथी, जो कृषि क्षेत्र में शोध कार्य कर रहे थे, ने मिलकर यह कंपनी शुरू की। हमारा मुख्य उद्देश्य था किसानों को बेहतर और स्वदेशी बायोलॉजिकल कृषि समाधान उपलब्ध कराना। हमने अपने अनुसंधान एवं विकास केंद्र की मदद से ऐसे उत्पाद विकसित किए, जो भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हों और किसानों की लागत कम करते हुए उनकी पैदावार बढ़ाएं। साथ ही, हम निर्यात के लिए भी उच्च गुणवत्ता वाले जैविक उत्पाद बनाते हैं।

इफको के साथ आपका सहयोग किस प्रकार है?

हम वर्ष 2020 से इफको के साथ एक जॉइंट वेंचर में कार्य कर रहे हैं। हमारी विशेषज्ञता माइक्रोबियल डेटाबेस में है, जिसमें 24,000 से अधिक माइक्रोबियल स्ट्रेन्स शामिल हैं। हम माइक्रोब्स के साथ–साथ माइक्रोबियल मेटाबोलाइट्स भी बनाते हैं, जिनके फॉर्मुलेशन अत्यंत प्रभावी हैं। इस साझेदारी के माध्यम से हम देशभर के अधिक से अधिक किसानों तक पहुंच रहे हैं। इफको के साथ हमारा प्रमुख उत्पाद फर्टीवैम गोल्ड (इफको माइकोराइजा) है, साथ ही हमारे 60 से अधिक अन्य उत्पाद भी बाजार में उपलब्ध हैं।

कैप्सबर एग्रीसाइंस की उत्पादन प्रक्रिया कैसी है?

देश में कई कंपनियां बायोलॉजिकल उत्पादन के मानकों पर पूरा ध्यान नहीं देतीं, लेकिन हमने इफको के साथ मिलकर एक विश्वस्तरीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला स्थापित की है, जो विशेष रूप से कृषि माइक्रोबियल पर केंद्रित है। हमारी टीम में प्रशिक्षित एंटोमोलॉजिस्ट, एग्रोनॉमिस्ट, माइक्रोबायोलॉजिस्ट और बायोटेक्नोलॉजिस्ट शामिल हैं। हम बीज उपचार से लेकर फसल कटाई के बाद तक किसानों को संपूर्ण माइक्रोबियल समाधान प्रदान करते हैं। इसके अलावा हम नेमाटीसाइड, हर्बीसाइड जैसे क्षेत्रों में भी अनुसंधान कर रहे हैं। हमारी उत्पादन इकाई जल्द ही भारत की सबसे बड़ी उत्पादन इकाइयों में से एक बनने जा रही है।

भारत में जैविक उत्पादों का भविष्य कैसा है?

वर्तमान में देश के किसान लगभग 7% बायो उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं, जो आने वाले समय में 20% तक पहुंचने की संभावना है। अगले 5–10 वर्षों में इस क्षेत्र में बड़ा बदलाव होगा। हालांकि, किसानों में अभी भी जागरूकता की कमी है, इसलिए हमें किसानों के साथ लगातार काम करना होगा। यह एक लंबी प्रक्रिया है, जिसके लिए समय, मेहनत और निवेश की आवश्यकता है। हमारी कंपनी को गेट्स फाउंडेशन से भी सहयोग मिला है, जिससे हम अधिक किसानों तक अपनी तकनीक पहुंचा रहे हैं। आज हम सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि अफ्रीका, ब्राजील और अन्य देशों में भी सक्रिय हैं।

किसानों को बायोलॉजिकल उत्पादों के बारे में क्या संदेश देंगे?

मैं किसानों से कहना चाहूंगा कि तुरंत परिणाम देखने के बजाय इन उत्पादों की स्थिरता और टिकाऊपन पर ध्यान दें। बायोलॉजिकल उत्पाद हमारी मिट्टी को स्वस्थ बनाते हैं, जिससे पैदावार और किसानों की आय दोनों बढ़ती हैं। हमें नीदरलैंड जैसे देशों से सीखना चाहिए, जहां उत्पादन हमारी तुलना में 20 गुना अधिक है। हमें भी कम जमीन में अधिक उत्पादन पर फोकस करना चाहिए।

कैप्सबर एग्रीसाइंस की दीर्घकालिक दृष्टि क्या है?

हमारा लक्ष्य है कि किसानों को स्वदेशी, उच्च गुणवत्ता और पर्यावरण अनुकूल जैविक समाधान उपलब्ध कराएं। हम चाहते हैं कि भारत कृषि उत्पादकता और स्थिरता दोनों में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो। इसके लिए हम अनुसंधान, तकनीक और किसानों के साथ साझेदारी को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

एरिज़ एग्रो किसानों को दे रही हैं टिकाऊ खेती के समाधान

आज हम बात कर रहे हैं कृषि बायोलॉजिकल्स और आधुनिक खेती में उनकी भूमिका पर। हमारे साथ मौजूद हैं डॉ. राहुल मिरचंदानी, जो एरिज एग्रो लिमिटेड के चेयरमैन हैं। एरिज एग्रो पिछले 55 वर्षों से किसानों के साथ काम कर रही है और 1 करोड़ से अधिक किसान इसके उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं। इस खास बातचीत में उन्होंने हमें बताया कि किस तरह कंपनी किसानों को आधुनिक समाधान, बायोलॉजिकल्स, प्रिसिजन एग्रीकल्वर और फसल विशेष उत्पाद उपलब्ध करा रही है।

एरिज एग्रो किस तरह से किसानों के लिए काम कर रही है?

हमारी कंपनी पूरे भारत के किसानों के साथ काम कर रही है। हम किसानों को माइक्रो न्यूट्रीएंट्स और स्पेशलिटी फर्टिलाइजर उपलब्ध कराते हैं। साथ ही, फसल और मिट्टी की जरूरत के अनुसार उत्पाद देते हैं जिससे पारंपरिक उर्वरकों का उपयोग कम हो और मिट्टी की सेहत बनी रहे। हमारा प्रयास है कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले पोषक तत्व मिलें, जिससे उत्पादन बढ़े और खेत की उर्वरता सुरक्षित रहे।

बायोलॉजिकल्स को अन्य उर्वरकों के साथ उपयोग करने से क्या फर्क पड़ता है?

बायोलॉजिकल्स प्राकृतिक तरीके से पौधों को पोषण और पेस्ट कंट्रोल उपलब्ध कराते हैं। ये मिट्टी की सेहत को सुधारते हैं और इकोसिस्टम को मजबूत बनाते हैं। पारंपरिक कीटनाशकों और उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी खराब होती है, लेकिन बायोलॉजिकल्स मिट्टी और पौधों दोनों को संतुलित पोषण देते हैं। उदाहरण के तौर पर हमारा उत्पाद एनटॉक्स पौधों के स्ट्रेस को कम करता है और हानिकारक हार्मोन को खत्म कर पौधों को बेहतर पोषण देता है।

इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट को लेकर आपकी क्या सोच हैं?

हम पिछले 25 वर्षों से किसानों को इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट के बारे में जागरूक कर रहे हैं। हमने नीति आयोग और प्रधानमंत्री कार्यालय के साथ भी सुझाव दिए थे कि संतुलित खाद, माइक्रो न्यूट्रीएंट्स और स्पेशलिटी फर्टिलाइजर का उपयोग मिशन मोड में होना चाहिए। आज लगभग 15–20% किसान INM (Integrated Nutrient Management) को समझ चुके हैं और अब यही किसान इस सोच को और आगे बढ़ा रहे हैं।

आने वाले समय में एरिज एग्रो किसानों के लिए कौन–से नए समाधान ला रही है?

हम तीन बड़े समाधान लेकर आए हैं–

1. **आत्मनिर्भर भारत की दिशा में**– चीन से आयात बंद होने के बाद हमने भारत में ही हाई डेंसिटी वाटर सॉल्युबल NPK लॉन्च किया है, जो कम डोज में भी बेहतर उत्पादन देता है।
2. **फसल विशेष उत्पाद**– सरकार से लाइसेंस लेकर हमने धान, गन्ना, बागवानी और मिर्च जैसी 15 फसलों के लिए विशेष एनपीके व माइक्रो न्यूट्रीएंट मिश्रण तैयार किया है।
3. **आधुनिक डिलीवरी सिस्टम**– हमने ऑटोमैटिक स्प्रेयर, ब्रॉडकास्टर और ड्रोन स्प्रे तकनीक किसानों के लिए उपलब्ध कराई है, जिससे पोषण खेतों तक सही तरीके से पहुँचे।

प्रिसिजन एग्रीकल्वर में कंपनी किस तरह से काम कर रही है?

पिछले तीन वर्षों में हमने हर फसल के लिए स्प्रे गाइडलाइन तैयार की है ताकि किसान सही ढंग से उत्पाद का उपयोग कर सकें। हमने अपने उत्पादों को ड्रोन कम्पेटिबल बनाया है। इसके अलावा, हमने AI आधारित मिट्टी जांच किट लॉन्च की है, जो कुछ ही समय में किसानों को उनके खेत की मिट्टी की रिपोर्ट दे देती है। यह तकनीक किसानों को फसल की सही जरूरत समझने और सही निर्णय लेने में मदद करती है।

आप किसानों को एरिज एग्रो की ओर से क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं किसानों से कहना चाहूँगा कि हमारी कंपनी पिछले 55 वर्षों से आपके साथ है। हमारे 130 से अधिक उत्पाद आज बाजार में उपलब्ध हैं और देशभर के 1 करोड़ से अधिक किसान उनका उपयोग कर रहे हैं। मैं सभी किसानों से आग्रह करता हूँ कि हमारी फसल सभाओं और ऑनलाइन कार्यक्रमों से जुड़ें, सही तकनीक और सही उत्पाद का चुनाव करें और खेती को और अधिक लाभदायक बनाएं।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

गुरविंदर कौर: तीन एकड़ जमीन से सफल डेयरी उद्यमी बनने तक का सफर

भारतीय कृषि में आज महिलाओं की भूमिका दिन–प्रतिदिन मजबूत हो रही है। महिलाएँ न केवल खेती–किसानी में हाथ बँटा रही हैं, बल्कि तकनीक को अपनाकर इसे एक लाभकारी उद्यम भी बना रही हैं। ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी है श्रीमती गुरविंदर कौर की, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र से निकलकर खेती और डेयरी उद्यमिता में कदम रखा और सफलता की नई मिसाल कायम की।

शुरुआत और पृष्ठभूमि

गुरविंदर कौर एक साधारण किसान परिवार से आती हैं और उनके पास मात्र तीन एकड़ जमीन है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने 2014 तक एक निजी स्कूल में शिक्षिका के रूप में काम किया। लेकिन उनके मन में हमेशा से यह सपना था कि वे कृषि क्षेत्र में कुछ नया करें और आत्मनिर्भर बनें। इसी सोच ने उन्हें खेती और डेयरी फार्मिंग की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

अपने तीन एकड़ खेत में उन्होंने गेहूँ, धान, मक्का, मूंग, मसूर और चने जैसी फसलें उगाना शुरू किया। साथ ही, अपने परिवार के लिए पोषण और अतिरिक्त आमदनी के उद्देश्य से उन्होंने कुछ गायें पालना भी शुरू किया। उनका लक्ष्य केवल उत्पादन तक सीमित नहीं था, बल्कि वे अपने ग्राहकों और गाँव के लोगों को भी बेहतर गुणवत्ता का दूध और अनाज उपलब्ध कराना चाहती थीं।

प्रशिक्षण और सीख

कृषि और डेयरी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए गुरविंदर कौर ने वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना जरूरी समझा। उन्होंने डेयरी विकास विभाग द्वारा आयोजित "डेयरी फार्मिंग" पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण में उन्हें पशुपालन, सही नस्ल का चयन, आवास व्यवस्था, आहार, प्रजनन और वैज्ञानिक प्रबंधन की बारीकियों के बारे में विस्तार से जानकारी मिली।

यही प्रशिक्षण उनके जीवन का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। प्रशिक्षण के बाद 2014 में उन्होंने अपने खेत में एक होल्स्टीन फ्रीजियन गाय से डेयरी फार्मिंग की छोटी इकाई शुरू की। धीरे–धीरे उन्होंने आधुनिक तकनीकों को अपनाकर दूध उत्पादन में लगातार वृद्धि की।

उपलब्धियाँ

गुरविंदर कौर की मेहनत और प्रशिक्षण से मिली जानकारी ने जल्द ही रंग दिखाया। उनकी मासिक आय बढ़ने लगी, जिससे उन्हें खेती और डेयरी दोनों में विस्तार करने का अवसर मिला। उन्होंने धीरे–धीरे चारा काटने की मशीन, दूध निकालने की मशीन और साइलेंज यूनिट जैसी आधुनिक सुविधाएँ खरीद लीं।

आज उनके पास चार होल्स्टीन फ्रीजियन दुधारू गायें हैं और वे रोजाना लगभग 100 लीटर दूध का उत्पादन करती हैं। यह दूध वे 'वेरका डेयरी' और गाँव के उपभोक्ताओं को बेचती हैं। इससे उन्हें स्थायी आय प्राप्त हो रही है और वे एक सफल डेयरी उद्यमी के रूप में स्थापित हो चुकी हैं।

सफलता के कारक

गुरविंदर कौर की सफलता के पीछे कई कारक हैं–

- परिवार का निरंतर समर्थन, जिसने उन्हें कठिन समय में आगे बढ़ने की ताकत दी।
- प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान, जिसने उन्हें परंपरागत तरीकों से हटकर आधुनिक डेयरी फार्मिंग अपनाने के लिए सक्षम बनाया।
- नवाचार की सोच, जिससे उन्होंने कम जमीन और सीमित संसाधनों के बावजूद अधिक उत्पादन और मुनाफा हासिल किया।

प्रेरणा और संदेश

गुरविंदर कौर आज अपने जिले की अन्य महिला किसानों के लिए एक प्रेरणा बन चुकी हैं। उन्होंने यह साबित किया है कि सीमित संसाधनों और छोटी जमीन के बावजूद यदि सही तकनीक, प्रशिक्षण और मेहनत का साथ मिले तो कृषि और डेयरी फार्मिंग को एक लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है।

उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि खेती में तकनीक और वैज्ञानिक प्रबंधन को अपनाकर न केवल अपनी आय बढ़ाई जा सकती है, बल्कि समाज को भी बेहतर गुणवत्ता का खाद्य और दूध उपलब्ध कराया जा सकता है। गुरविंदर कौर का यह सफर बताता है कि महिलाएँ भी कृषि उद्यमिता में नई ऊँचाइयाँ छू सकती हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल बन सकती हैं।

कोदों-कुटकी की उन्नत उत्पादन तकनीक

मध्यप्रदेश में प्रायः सभी प्रकार की लघु धान्य फसलें ली जाती हैं। रकवा के द्वष्टि कोण फसल प्रदेश में प्रमुख रूप से कोदो एवं कुटकी की फसल उगाई। जाती है। ये फसलें गरीब एवं आदिवासी क्षेत्रों में उस समय पैदा की जाने वाली खाद्यान फसलें हैं जिस समय पर उनके पास किसी प्रकार का अनाज खाने को उपलब्ध नहीं हो पाता है। फसलें अगसत के अंतिम सप्ताह या सितम्बर के प्रारंभ में पककर तैयार हो जाती है।

1. भूमि की तैयारीः— ये फसलें प्रायः हर प्रकार की भूमि में पैदा की जा सकती है। जिस भूमि में अन्य कोई धान्य फसलों उगाना सम्भव नहीं होता वहां भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं ये फसले उतार—चढाव वाजी, कम जल धारण क्षमता वाली, उथली सतह वाली आदि कमजोर किस्त में अधिकतर उगाई जाती है। हल्की भूमि में जिसमें पानी का निकास अच्छा हो इसकी खेती के लिये उपयुक्त होती हैं बहुत अच्छा जल निकास होने पर लघु धान्य फसलें प्रायः सभी प्रकार की भूमि में उगाई जा सकती है। भूमि की तैयारी के लिये गर्मी की जूताई करें एवं वर्शा होने पर पुनः जुताई करें या बखर चलायें जिससे मिट्टी अच्छी तरह से भुरभुरी हो जावें।

2. बीज का चुनाव एवं बीज की मात्राः— भूमि की किस्म के अनुसार उन्नत किस्म के बीज का चुनाव करें। हल्की रेतीली, पथरीली व कम उपजाऊ भूमि में जल्दी पकने वाली जातियों का तथा मध्यम गहरी व दोमट भूमि में एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में देर से पकने वाली जातिंयों की बोनी करें। लघु धान्य फसलों की कतारों में बुवाई के लिये 8—10 किलोग्राम बीज तथा छिटकवां बोनी के लिये 12—15 किलोग्राम बीज में लघु धान्य फसलों को अधिकतर छिटकवां विधि से बोया जाता है। किन्तु कतारों में बोनी करने से निदाई गुडाई में सुविधा होती है और उत्पादन मं वृद्धि होती है।

3. बुवाई का समय, बीजोपचार एवं बुवाई का तरीका :— वर्षा आरंभ होने के तुरंत बाद लघु धान्य फसलों की बोनी कर देना चाहिये। भीघ्र बोनी करने से उपज अच्छी होती है। एवं रोग, कीट का प्रभाव कम होता है। कोदों में सूखी बोनी मानसून आने के दस दिन पूर्व करने पर उपज में अन्य विधियों से अधिक से अधिक उपज प्राप्त होती है। जुलाई के अंत में बोनी करने से तना मक्खी कीट का प्रकोप बढनां है। बोनी से पूर्व बीज को पेरासान या डायथेन एम—45 या कार्बक्सिन : थायरत 3 ग्राम प्रति किलों के हिसाव से बीजोपचार करें। ऐसा करने से बीज जनित रोगों एवं कुछ हद तक मिट्टी जनित रोगों में फसल की सुरक्षा होती है। कतारों में बोनी करने पर कतार से कतार की दूरी 20—25 से.मी. तथा पौधों से पौधों की दूरी 7 से.मी. उपयुक्त पाई गई है। इसकी बोनी 2—3 से.मी. गहराई पर की जानी चाहिये। कोदों में 6—8 लाख एवं कुटकी में 8—9 लाख पौधे प्रति हेक्टेयर होना चाहिये।

4. उन्नत जातियॉः— जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र डिण्डौरी व रीवा द्वारा कोदो, कुटकी व रागी की अनेक उन्नतशील जातिंया विकसित की गई जो कि स्थानीय जातियों की तुलना में 20—30 प्रतिशत अधिक उपज देती है। साथ ही कीट व रोग निरोधित है। इन किस्मों को अपनाकर अधिक पैदावार लिया जा सकता है।

4.1 कोदोः—

1. जवाहर कोदो 41ः— इसके दानों का रंग हल्का भूरा होता है पौधे की ऊंचाई 55—56 से.मी. होती है। यह जाति 105—110 दिनों में पककर तैयार होती है। इसकी औसत पैदावार 16—18 क्विं/हे. होती है।

2. जवाहर कोदों 364ः— इस जाति के बीज गहरे भूरें या चाकलेटी रंग के होत है। पौधे की ऊंचाई 80—85 से.मी. होती है। तथा 4—5 मुख्य कल्ले निकलते है। इसकी पैदावार 12—15 क्विं/हे. होती है।

3. जवाहर कोदों 62ः— पौधे की ऊंचाई 50—55 से.मी. होती है।

यह किस्म 95—100 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं यह जाति पत्ती के धारीदार रोग के लिए प्रतिरोधी हैं इसकी औसत उपज 20—22 क्विं/प्रति हे. है। यह किस्म सामान्य वर्षा वाली तथा कम उपजाऊ भूमि में आसानी से ली जा सकती है।

4. जवाहर कोदों 106 :— कोदों समान्यतः पड़त भूमि तथा अनुपजाऊ क्षेत्र में कम लागतः में उगाई जाती है। यह किस्त स्थानीय किस्म से चयन की गई है। जिसका औसत उत्पादन 19.47 क्विं. प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म म.प्र. के आदिवासी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त है। इसके पौधों की ऊंचाई 56. से.मी. पकने की अवधि 100 दिना एवं 1000 दानों का वनज 5 से 5.6 ग्राम है। यह किस्म कंडुआ रोग तना मक्खी निरोधक हैं यह मुख्य अंतरवर्तीय उत्पादन अन्य किस्मों की तुलना में मिलता है।

5. जवाहर कोदों 79 :— यह किस्म मात्र 85 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म तने मक्खी के प्रकोप से मुक्त है। किस्म 16—18 क्विं/प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

6. जी.पी.यू.के. :— **3** यह किस्म लगभग 100 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई 55—60 से.मी. होती है। यह जाति संपूर्ण भारत के लिये अनंशंसित की गई है। इसकी उपज 522—25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

4.2 कुटकी :—

1. जवाहर कुटकी 1 (डिण्डौरी 1) इसका बीज हल्का काला वा वाली की लम्बाई 22. से.मी. होती है। यह जाति 75 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 8—10 क्विंटल प्रति हे. हैं।

2. जवाहर कुटकी 2 :— इसके दाने गोल भूरे रंग के , पौधा 90—95 से.मी. ऊंचा व सीधा होता है। यह प्रजाति 75—80 दिनों में पक कर तैयार होती है। इसकी उपज क्षमता 7—8 क्विं/ प्रति हेक्टेयर. है।

3. जवाहर कुटकी 36 :— इसका नई विकसित किस्म के पौधो की ऊंचाई 91.7 से.मी. पकने की अवधि 76 दिन, 1000 दानों का वनज 2.1 ग्राम है। यह कंडवा रोग एवं तना मक्खी के लिये सहनशील है। यह किस्म मुख्य फसल एवं अंतरवर्तीय फसल पद्धति के लिये उपयुक्त है इसकी औसत उपज 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

4. जवाहर कुटकी 8 :— इसका दाना हल्के भूरे रंग का होता है। पौधे की ऊंचाई 80 से.मी. तथा प्रति पौधा 8—9 कल्ले निकलते है। यह जाति 80 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 8—10 क्विंटल प्रति हे. है।

5. सी. ओ. 2 :— यह जाति 80—85 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसका पौधा 110—120 से.मी. को होता है। यह संपूर्ण भारत के लिये अनुशंसित है।

6. पी. आर. सी. 3 :— यह किस्म 75—80 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की लम्बाई 100—110 से.मी. होती है। इसकी आसत 100—110 से.मी. होती है। इसकी आसत उपज 9—10 क्विं/प्रति हेक्टेयर है।

7. को 2 :— इसकी ऊंचाई 105—110 से.मी. बालियॉ छितरी फैली हुई व उपज क्षमता 10—12 क्विं. प्रति हे. पाई गई है। अधिक नत्रजन (40 कि.ग्रा.) देने पर भी यह प्रजाति हवा से नही गिरती है।

8. को. 3 :— यह जाति भी को —2 भाति लगभग 105—110 दिन में पककर तैयार लोती है। परन्तु उपज क्षमता 10—12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक मिलती है। इसके अतिरिक्त डिण्डौरी कुटकी 315 एवं ओ. एल. एन—20 पूर्व विमोचित किस्में अधिकतम उपज प्रदान करने वाली पाई जा रही हैं।

6 निदाई गुडाई:— बुआई के 20—30 दिन के अंदर एक बार हाथ से निदाई करना चाहिये तथा जहॉ पौधों को उखाडकर रोपाई करके पौधों की संख्या उपयुक्त करना चाहिये। यह कार्य 20—25 के अंदर कर लेना चाहिये यह कार्य पानी गिरते समय सर्वोत्तम होता है। बआई पश्चात एवं अंकुरण पूर्व एट्राजिन 1 किलो सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करने से सकरे व चौडे पत्ते वाले खरपतवार नही उगते तथा निदाई की आवश्यकता नही पड़ती।

7. पौध संरक्षण उपाय :— (हेयरी कैटरपिलर) इसकी इल्लियां पत्तियों को खाकर नुकसान पहुचाती है।

प्रबंधनः इण्डाक्साकार्ब 15.8 ई. सी. 500 मिली मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें

2. व्हाइट ग्रब (इल्ली):— ये इल्ली मिट्टी में जड के पास रहकर जडों व तनों को क्षति पहुँचाती है जिससे पौधे पडकर सूखने लगते है।

प्रबंधनः— फिप्रोनिल 0.6 प्रतिशत दानेदार दवा 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करना चाहिये।

1. कोदों कण्डवा रोग :— पूरी बाली में दानों की जगह काले रंग का पाउडर भर जाता है।

प्रबंधन :— ट्रायसाइक्लोजोल 75 डब्लू. पी. की 1.5 ग्राम/किलोग्राम दवा से बीज को उपचारित कर बोना चाहिये खडी फसल में कण्डवा ग्रसित पौधों को निकाल कर जला देना चाहिये।

2. ब्लास्ट (झुलसन):— इसमें पत्तों डंठल और बाल पर भूरे रंग के घब्बे दिखाई देते है।

प्रबंधन :— डायथेन एम—45 का 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव, रोग दिखाइ देने पर करना चाहिय। दूसरा छिड़कावं कैसे निकलते समय तथा तीसरा पुश्पावस्था के समय करना चाहिये या झुलसा निरोधी जातियां लगाना चाहिये।

3. लीफ ब्लाइटः— इसमें भी पत्ते डंठल व बाल पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है।

प्रबंधन :— थीरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। खडी फसल में से उक्त बीमारी के रोकथाम डायथेन एम—45 का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव, रोग दिखाई देने पर करना चाहिये।

फसल कटाईः— जब फसल पूरी तरह से पक जोय जब कटाई करना चाहिये। कुटकी 6, 0—75 दिनों में, कोदों 100—125 दिनों में व रागी 95—120 दिनों में (जातियों के अनुसार) पक कर तैयार हो जाती है।

डॉ. स्मिता सिंह—डॉ. अखिलेश कुमार—मंजू शुक्ला
—श्री संदीप कुमार शर्मा—डॉ. ए.के. पाण्डेय
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

गन्ना फसल में कीट प्रबंधन

टॉप शूट बोरर–

मुख्य लक्षण

- कैटरपिलर (सुंडी) मुख्य रूप से गन्ने के शीर्ष भाग में पाए जाते हैं, जो बढ़ते बिंदु (growing point) और ऊपरी गांठों (joint) में सुरंग बनाकर कोमल रसदार भाग तक पहुँचते हैं।
- विकसित गन्ने में डेड हार्ट (dead heart) हो जाता है, जिसे आसानी से खींचा नहीं जा सकता।
- सुंडी बिना खुले पत्तों में छेद कर देती है, जिससे निकलती हुई पत्तियों में समानांतर पंक्ति में शॉट होल्स (छेद) दिखाई देते हैं।
- गन्ने की ऊपरी शूट में बोर होल्स बनते हैं और पौधे में बंची टॉप (bunchy top) लक्षण प्रकट होता है।
- पत्तियों के मध्य शिरा में लाल रंग की सुरंगें दिखती हैं।
- युवा पौधे विशेष रूप से आर्द्र वातावरण में इस कीट के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

कीट की पहचान–

- **अंडा**– अंडे शीर्ष पत्तियों की निचली सतह पर गुच्छों में, विशेष रूप से मध्य शिराओं के पास रखे जाते हैं। ये गुच्छे भूरे रंग के बालों से ढके रहते हैं।
- **लार्वा**– चिकना, सफेद या क्रीम रंग का, पीले सिर के साथ और पीठ के मध्य में लाल रेखा होती है।
- **प्यूपा**– प्यूपेशन (कोषावस्था) लार्वा द्वारा बनाई गई सुरंग में बने कक्ष में होता है, जिसमें एक निकासी छेद होता है।
- **वयस्क**– चाँदी जैसे सफेद रंग का कीट (मादा के पिछले हिस्से पर नारंगी–भूरे रंग का बालों का गुच्छा होता है)।

भौतिक/यांत्रिक प्रबंधन–

- प्रतिरोधी/सहनशील किस्में अपनाएं– CO 419, CO 745 और CO 6516A, Co 859, Co 1158 और Co 7224।
- **सहनशील किस्में**– Co 859, Co 1158 और Co 7224।
- छोटा मिट्टी चढ़ाना (small earthing up) और ट्रैश मल्चिंग करना।
- मक्का और ज्वार को अंतर्वर्ती फसल के रूप में न लगाएँ।
- डेड हार्ट पौधों को हटा कर नष्ट कर दें/जला दें।
- गन्ने की बुवाई में जोड़ी पंक्ति पद्धति (paired row) अपनाएँ।
- नाइट्रोजन उर्वरक का अत्यधिक उपयोग न करें।
- अंडों के गुच्छों को इकट्ठा कर नष्ट करें।
- अंडों के संग्रह का अभियान प्रति 4 दिन पर चलाएँ, जो कीट के उभरने के दिन से शुरू किया जाता है।
- खेत में प्रति एकड़ 2–4 लाइट ट्रैप और 4–5 फेरोमोन ट्रैप लगाएँ, जो वयस्क कीटों को आकर्षित कर नष्ट करता है।

जैविक विधि प्रबंधन–

- परजीवी Gambroides (Isotim) javensis को प्यूपा अवस्था में 100 जोड़े प्रति हेक्टेयर की दर से छोड़ें।
- परजीवी रहित अंडों को 30 मेष नायलॉन बैग में रखकर चुनिंदा नष्ट करें, ताकि वयस्क परजीवी निकल जाएँ और केवल बिना परजीवी वाले अंडों से निकली सुंडियाँ बैग में ही रहें।
- अंडा परजीवी जैसे Trichogramma chilonis] Telemonus beneficiens, लार्वा परजीवी जैसे Goniozus indicus, Chelonus sp- को प्रोत्साहित करें।
- प्यूपा परजीवी Ichneumonid parasitoid (Isotima javensis) को 40 जोड़े प्रति एकड़ की दर से छोड़ें।

रेड माइट–

संक्रमण के लक्षण–

- पत्तियों पर लाल–भूरे रंग के सूक्ष्म कीट दिखाई देते हैं।

- पत्तियाँ पीली होकर सूखने लगती हैं।
- फोटोसिंथेसिस कम होने से गन्ने की वृद्धि रुक जाती है।

नियंत्रण–

- खेत में पर्याप्त नमी बनाएँ, अधिक सूखापन न होने दें।
- रोगग्रस्त पत्तियाँ तोड़कर जला दें।
- सल्फी गार्ड (सल्फर आधारित दवा) का छिड़काव करें।

व्हाइट फ्लाई–

संक्रमण के लक्षण–

- पत्तियों की निचली सतह पर सफेद कीटों का झुंड।
- पत्तियाँ पीली पड़कर कमजोर हो जाती हैं।
- मधुरस (honeydew) गिरने से पत्तियों पर काली फफूंद (sooty mould) लगती है।

नियंत्रण–

- प्रभावित पत्तियों को तोड़कर नष्ट करें।
- खेत में संतुलित नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग करें, अधिक न दें।
- पीली स्टिकी ट्रैप (Yellow sticky trap) प्रति हेक्टेयर 10–12 लगाएँ।
- ट्रिगर और नीम से बने उत्पाद नीमाडॉन का प्रयोग करते हैं।

मिलीबग–

संक्रमण के लक्षण–

- तनों, पत्तियों एवं गन्ने की गाँठों पर सफेद रूई जैसे कीट।
- ये रस चूसकर पौधे को कमजोर कर देते हैं।
- खेत में खरपतवार पर भी यह तेजी से पनपते हैं।

नियंत्रण–

- खेत में खरपतवार समय से निकालें।
- गन्ने के सूखे पत्ते, छिलके आदि को जला दें।
- मेंड़ों की घास आदि साफ रखें।
- जैविक नियंत्रण– क्रिप्टोलेमस
- (परभक्षी भिंडी) को 5000 प्रति हेक्टेयर खेत में छोड़ें।
- ट्रिगर और नीम से बने उत्पाद नीमाडॉन का प्रयोग करते हैं।

विष रहित की विधि से कीट प्रबंधन–

इस प्रबंधन में हम उन उपचारों का प्रयोग करते हैं जो मानव के लिए हानिकारक नहीं है। किसने वनस्पति एवं जैव आधार आधारित कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है जो मुख्य रूप से ब्रेवोडॉन, ट्रिगर ,सल्फी गार्ड और नीम से बने उत्पाद नीमाडॉन का प्रयोग करते हैं

ब्रावोडॉन (ब्यूवेरिया स्पेसिज)

ब्रावोडॉन में एंटोमोपैथोजेनिक फंगस ब्यूवेरिया स्पोर के माइसेलिया के टुकडे होते हैं। मुख्य रूप से चूसने वाले और लेपिडोप्टेरान कीटों के नियंत्रण के लिए अनुशंसित है।

कार्य विधि– ब्यूवेरिया प्रजाति कीट के सभी चरणों जैसे अंडा, लार्वा, प्यूपा, ग्रब, निम्फ, हॉपर और वयस्क के नियंत्रण में समान रूप प्रभावी है। कीट की त्वचा से संपर्क होने पर ब्यूवेरिया प्रजाति का स्पोर अंकुरित होता है और एंजाइम क्रिया के माध्यम से कीट के शरीर में प्रवेश करता है। फिर यह फैलता है और पूरे कीट को पर कब्जा करता है और जिससे उसके शरीर से पोषक तत्व और पानी निकल जाता है। अंततः कीट का शरीर सफेद कवकजाल और बीजाणुओं से ढक जाता है जिससे कीडों की मृत्यु हो जाती है।

लाभ–

- फसलों के सभी चरणों में प्रभावी ढंग से कार्य करता है।
- यह पर्यावरण के अनुकूल है और जैविक खेती के लिए उपयुक्त है।
- पौधों के की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करता है

प्रयोग विधि–

- ब्रावोडॉन स्प्रे करने के लिए 1 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से पानी में घोलकर स्प्रे सायं काल करें।
- 1 एकड़ खेत के लिए 250 ग्राम ब्रावोडॉन की आवश्यकता होती है।
- ब्रावोडॉन स्प्रे सदैव शाम को करें और 15 से 20 दिन के अंतराल पर दोबारा स्प्रे करें।

ट्रिगर(वर्टीसिलियम लेकानी–1.15% डब्ल्यु पी)

ट्रिगर एक जैविक कीटनाशक है जिसमे प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले एटोपैथोजेनिक फफूंद वर्टीसिलियम लेकानी के स्पोर और माइसिलिया के अंश होते हैं। जो मोमी कवच एवं रसचूसने वाले कीडों पर प्रभावि नियंत्रण करते है।

कार्य विधि–

वर्टी सिलियम लेकानी नाम का ये कवक बहुत से विषैले उत्पाद छोडती हे जैसे बेस्सियोनोलाइड डिपीकोलिनिक जो कीटों को संक्रमित कर मार देता है। जैसे माहू, सफेद मक्खी, स्क्रेल कीट आदि।

जब फफूंद के स्पोस कीट की त्वचा के समर्पक में आते है तब यह कीट के बाहय कवच को भेदकर कीट के शरीर के अन्दर फैलकर कीटों के पोषक तत्व को उपभोग कर कीट को 48–50 घन्टे में मार देता है।

लाभ–

- कोमल शरीर वाले रस चूसने वाले कीटों पर अत्यन्त प्रभावशाली जैसे कि मॉहू, तेला, मीलीबग, चेपा, फूदका आदि।
- फसल को नुक्सान पहुंचाने वाले रस चूसने वाले कीटों को प्रभावी ढंग से नियंत्रण करता है।
- यह कीटों का प्रतिरोधक शक्ति पैदा नही करता है।

प्रयोग विधि–

- ट्रिगर स्प्रे करने के लिए 1 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से पानी में घोलकर स्प्रे सायं काल करें ।
- 1 एकड़ खेत के लिए 250 ग्राम ट्रिगर की आवश्यकता होती है।
- ट्रिगर के अच्छे परिणाम के लिए 200 ग्राम गुड़ को 2 लीटर पानी में

अच्छे से उबालकर एक एकड़ के लिए आवश्यक गोल में मिला देते हैं।

- ट्रिगर स्प्रे सदैव शाम को करें और 15 से 20 दिन के अंतराल पर दोबारा स्प्रे करें।
- स्प्रे इस प्रकार करना चाहिए कि पूरा पौधा अच्छी से गीला हो जाए।

सल्फी गार्ड (सल्फर 80% डब्ल्यू.डी.जी.)

(निवारक और उपचारात्मक स्पशीय फफूंदीनाशक)

सल्फी गार्ड एक सक्रिय घटक के रूप में 80% सल्फर से बना है। इसका उपयोग पौधों में फफूंद/फगल रोग को रोकने के लिए किया जाता है। यह एक व्यापक स्पेक्ट्रम संपर्क फफूंदीनाशक है जिसे एक प्रभावी फफूंदीनाशक/कीटनाशक के रूप में मान्यता प्राप्त है। सल्फर क्लोरोफिल संश्लेषण के निर्माण और पौधों में पोटीन के निर्मता के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में कार्य करता है।

कार्य विधि– सल्फर 80% डब्ल्यु. डी.जी व्यापक स्पेक्ट्रम संपर्क और सुरक्षात्मक फफूंदीनाशक और मिटिसाइड है। यह सल्फर भी प्रदान करता है, जो पौधे के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व है।

लाभ–

- सल्फर 80 प्रतिशत पानी में घुलनशी दानेदार स्पर्शीय फफूंदीनाशक और माइक्रोनाइज्ड सल्फर गेन्यूल फॉर्मूलेशन में उपलब्ध है।
- पानी में तत्काल घुलनशील और उच्च निलंबन कणक है।
- यह फफूंदीनाशक, माइक्रोन्यूट्रिएंट और सूक्ष्म कीटनाशी के रूप में कार्य करता है
- इसका निरन्तर व लम्बे समय तक प्रभावी रहता है

प्रयोग विधि–

- सल्फी गार्ड स्प्रे करने के लिए 5 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से पानी में घोलकर स्प्रे करें।
- एक एकड़ खेत के लिए 1 किलोग्राम सल्फी गार्ड की आवश्यकता होती है।
- ट्रिगर के अच्छे परिणाम के लिए 200 ग्राम गुड़ को 2 लीटर पानी में अच्छे से उबालकर एक एकड़ के लिए आवश्यक गोल में मिला देते हैं।
- सल्फी गार्ड 15 से 20 दिन के अंतराल पर दोबारा स्प्रे करें।
- स्प्रे इस प्रकार करना चाहिए कि पूरा पौधा अच्छी से गीला हो जाए।

वानस्पतिक कीटनाशक नीमार्डॉन– नीमार्डॉन एक नीम तेल–आधारित, कॉन्सेंट्रेट फॉर्मूलेशन है जिसमें एजाडिरेक्टिन और अन्य एल्कालाइड होते है जिनमें वनस्पति कीटनाशक गुण होते है। नीमार्डान 200 से अधिक कीट कीटो पजातियों के खिलाफ प्रभावी है और तवे समय तक कीटों से सुरक्षा पदान करता है। यह सूत्रीकरण एजाडिरेक्टिन की विभिन्न सन्द्रता में उपलब्ध है जो कि 300, 1500, 3000, 10,000 पी पी एम और 5% पी. पी एम के स्तर पर बनाए रखा जाता।

लाभ–

- यह एक व्यापक स्पेक्ट्रम प्राकृतिक/वानस्पतिक कीटनाशक के रूप में कार्य करता है, अत्यधिक बायोडिग्रेडेबल है।
- नीमार्डॉन फसलों को हानि पहुँचाने वाले कीटो, सफेद मक्खी, थिप्स, चेपा तेला, स्केल, वूली एफिड इन सभी की संख्या को बढने से रोकता है।
- नीमार्डॉन सूण्डी व रस चूसने वाले कीटों को स्वाने से रोकता है व कीड़ों को पौधों से दूर रखता है। निमार्डॉन की गंध कीटों की तितली को फसलों से दूर भगाती है जिसके कारण मादा तितली फसल पर अंडे नहीं दे पाती है।
- निमार्डॉन कीडे की चारों अवस्थाओं को नियंत्रित कर कीटों के जीवन चक्र को तोड डालता है।
- निमार्डॉन नर व मादा तितली के मिलने की क्रिया में बाधा डालता है व तितली के अंडे देने की क्षमता को खत्म कर देता है।
- सभी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशको और फफ्टीनाशी के साथ संगत है।

प्रयोग विधि–

- जब फेरोमेन ट्रैप में एक दो कीट पकड़ जाएं तो समझे कीट हमारे खेत के वातावरण में उपलब्ध हैं। ऐसी अवस्था में निमार्डॉन का स्प्रे करना चाहिए।
- निमार्डॉन की 2–4 उस. की मात्रा पानी में मिलाकर स्प्रे करना चाहिए इस प्रकार करना चाहिए कि पूरा पौधा अच्छी से गीला हो जाए जिससे अंडे से निकलने वाले लार्वा भोजन के अभाव में मर जाएं। 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 स्प्रे अवश्य करें।

विशेष

किसान भाई गन्ने की खेती में उपरोक्त बताए हुए सुझाव अपनाएं, कीट के संक्रमण से पूर्व ब्रेवोडॉन, ट्रिगर, सल्फीगार्ड और नीमार्डॉन आदि का समय–समय पर प्रयोग करें तो उनके खेत में कीटों की समस्या नहीं होगी।

अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान भाई एशिया डॉन बायोकेयर के उत्पाद जर्मिनेटर, माइकोडॉन, वर्टी डॉन सी आदि का प्रयोग करके किसान गन्ने का कम लगात में कीट एवं रोग मुक्त, विषरहित भरपूर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

रासायनिक विधि से प्रबंधन–

जब गन्ने में कीट का प्रकोप बहुत अधिक हो जाए तो ऐसी दशा में संस्तुत किए गए रसायन का प्रयोग भी करते हैं। रसायनों का प्रयोग योग्य व्यक्ति की सलाह लेकर के ही करें जैसें–जिला फसल संरक्षण अधिकारी, उद्यान अधिकारी, कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक ,कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक आदि से संपर्क एवं संस्तुति के बाद ही आप किसी रसायन का प्रयोग करें।

संजय श्रीवास्तव
एफ.टी.सी. ऑर्गेनिक
मो. 9821818004
Email: info@ftcorganic.com

जिंक की महत्वता

फसल उत्पादन में जिंक तत्व का महत्वपूर्ण योगदान है। पौधों में जिंक की कमी से फसल उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिससे अनाज उत्पादन कम होता है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में फसल उत्पादन में 40 प्रतिशत तक की कमी देखने को मिली है जिसके कारण किसान भाइयों की आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ता है।

संतुलित उर्वरक उपयोग में जिंक को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि इससे मृदा स्वास्थ्य व फसलों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है जिसके फलस्वरूप खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

जिंक पोषक तत्व को बढ़ावा देने से मृदा, फसल व मनुष्यों में जिंक की कमी की पूर्ति होती है। इस सन्दर्भ में दीर्घकालीन स्थायी समाधान के लिए जिंक युक्त उर्वरक अनाज उत्पादन में अति आवश्यक है।

जिंक उर्वरक के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:–

Zinc
...essential for life

जिंक न्यूट्रियंट इनिशिएटिव
इंटरनैशनल जिंक एसोसिएशन
G1 & G5, ग्राउंड फ्लोर, एलाइड भवन
लोकल शॉपिंग कॉम्पलैक्स, कम्यूनिटी सेंटर, पुष्प विहार
नई दिल्ली – 110 062, भारत
+91-29960040 I sdas@zinc.org I www.zinc.org/crops

Zinc Nutrient Initiative

मसूर की वैज्ञानिक खेती से कमाये अधिक मुनाफा

वर्तमान समय में, भारत दलहन के आयात, उत्पादन और उपभोग की दृष्टि से देखा जाय तो विश्व में प्रथम स्थान आता है। भारत में वर्ष 2023–24 में दलहन का उत्पादन 24.5 मिलियन मीट्रिक टन और उत्पादन में कमी होने के कारण लगभग 4.74 मिलियन मीट्रिक टन दलहन का आयात किया गया था मानव स्वास्थ के साथ–साथ महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण की समस्या को कम करने के लिए हमें दलहन उत्पादन बढ़ाने पर जोर देना होगा। इसके लिए भारत में धान परती भूमि वाले क्षेत्रों पर जो कि रवि मौसम में परती भूमि रह जाती है, वहां पर फसल की सघनता के माध्यम से एक सुनहरा अवसर प्रदान करते है हमारे देश में कुल धान परती का करीब 82 प्रतिशत हिस्सा है। भारत एकल फसल के साथ साथ उतेरा विधि से मसूर की उन्नत खेती करके दलहन का उत्पादन अधिक अधिक बढ़ा सकते हैं। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में कृषि पूरी तरह से वर्षा पर आश्रित और सिंचाई के सीमित संसाधन होने के कारण रवि मौसम में किसानों की भूमि परती ही रह जाती है।

भारत मसूर उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान रखता है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देखें तो मध्य प्रदेश 39.56 प्रतिशत के साथ पहला स्थान और इसके बाद उत्तर प्रदेश व बिहार में 34.36 प्रतिशत व 12.40 प्रतिशत का दूसरा और तीसरा स्थान है। उत्पादन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश की प्रथम 36.65 प्रतिशत (3.80 लाख टन) व मध्य प्रदेश 28.82 प्रतिशत का दूसरा स्थान है और अधिकतम उत्पादकता बिहार राज्य (1124 किलोग्राम/हेक्टेयर) व सबसे कम उत्पादकता महाराष्ट्र राज्य (410 किलोग्राम/हेक्टेयर) है। उतेरा विधि से मसूर की एकल या मिश्रित फसल के रूप सरसों या जौ की खेती भी सफलतापूर्वक करके काफी अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 60.8 ग्रा. कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्रा. रेशा, 69 मिग्रा. कैल्शियम, 300 मिग्रा. फास्फोरस, 7 मिग्रा. लोहा, 0.21 मिग्रा राइबोफ्लोविन, 0.51 मिग्रा. थाइमिन तथा 4.8 मिग्रा. नियासिन पाया जाता है अर्थात मानव जीवन के लिए आवश्यक बहुत से खनिज लवण और विटामिन्स से यह परिपूर्ण दाल है। रोगियों के लिए मसूर की दाल अत्यन्त लाभप्रद मानी जाती है क्योकि यह अत्यंत पाचक है। दाल के अलावा मसूर का उपयोग विविध नमकीन और मिठाईयाँ बनाने में भी किया जाता है। इसका हरा व सूखा चारा जानवरों के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में गाँठे पाई जाती हैं, जिनमें उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु वायुमण्डल की स्वतन्त्र नाइट्रोजन का स्थिरीकरण भूमि में करते हैं जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। अतः फसल चक्र में इसे शामिल करने से दूसरी फसलों के पोषक तत्वों की भी कुछ प्रतिपूर्ति करती है। इसके अलावा भूमि क्षरण को रोकने के लिए मसूर को आवरण फसल के रूप में भी उगाया जाता है। मसूर की खेती कम वर्षा और विपरीत परिस्थितिओं वाली जलवायु में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है।

जलवायु और मिट्टी

मसूर ठंडे मौसम के लिए उपयुक्त एक दलहनी फसल है, और भारत में यह वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाई जाती है। बुवाई के समय 20–25 डिग्री सेल्सियस तापमान और अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। अत्यधिक वर्षा या नमी वाली जलवायु इसके लिए हानिकारक है, इसलिए शुष्क और ठंडी जलवायु सबसे उपयुक्त है। मसूर के लिए 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली मिट्टी उपयुक्त होती है। खेत की तैयारी के लिए एक गहरी जुताई के बाद, हैरो और पाटा चलाकर खेत को समतल करना चाहिए।

बीज दर, बुआई का समय एवं बीजोपचार

मुख्य फसल के लिए 30–35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और देर से बुवाई के लिए 40–60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। सिंचित दशा में मसूर की बुआई उचित समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्वर तक होता है। उतेरा विधि से मसूर की बुबाई का उचित समय धान की फसल में नमी उपलब्ध रहने पर अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक। बुआई से पहले, बीज को थीरम या बाविस्टिन से उपचारित करें। बीजों को राइजोबियम और पीएसबी कल्चर से उपचारित करना भी फायदेमंद है। अगेती फसल के लिए पंक्तियों में 30 सेंटीमीटर की दूरी और देर से बुवाई के लिए 20–25 सेंटीमीटर की दूरी उपयुक्त है। मसूर का बीज छोटा होता है, इसलिए 3–4 सेंटीमीटर की गहराई पर बुवाई करें। सीड ड्रिल मशीन का उपयोग करके बुवाई करना बेहतर होता है। उतेरा विधि में बीज की बोआई धान की फसल के पकने से 15–20 दिन पहले मसूर का 40–50 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर के दर से छिटक कर बुआई करनी चाहिए।

मसूर की प्रमुख उन्नत किस्म

नरेन्द्र मसूर–1– यह किस्म 120 से 130 दिन में तैयार होकर 15–20 क्विंटल उपज देती है। रस्ट रोग प्रतिरोधी तथा उकठा रोग सहनशील किस्म है।

पूसा –1– यह किस्म जल्दी पकने (100–110 दिन) वाली है। इसकी औसत उपज 18 – 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। 100 दानो का वजन 2.0 ग्राम है। यह जाति सम्पूर्ण म. प्र. के लिए उपयुक्त है।

पन्त एल–406– यह किस्म लगभग 150 दिन में तैयार होती है जिसकी उपज क्षमता 30–32 क्विंटल प्रति हैक्टर है। रस्ट रोग प्रतिरोधी किस्म उत्तर, पूर्व एवं पस्चिम के मैदानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है।

टाइप–36– यह किस्म 130–140 दिन में पककर तैयार हो जाती है। औसत उपज 20 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसके 100 दानों का वजन 1.7 ग्राम है। यह किस्म केवल सतपुड़ा क्षेत्र को छोड़कर सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के लिए उपयुक्त है।

बी. 77– यह किस्म 115–120 दिन में पककर तैयार हो जाती है एवं औसत उपज 18–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आती है। इसके 100 दानों का वजन 2.5 ग्राम है। यह किस्म सतपुड़ा क्षेत्र (सिवनी, मण्डला एवं बैतुल) के लिए उपयुक्त है।

एल. 9–12– यह किस्म देर से पकने (135–140 दिन) वाली है। इसकी औसत उपज 18–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। 100 दानों का वजन 1.7 ग्राम है। यह किस्म ग्वालियर, मुरैना तथा भिंड क्षेत्र के लिये उपयुक्त है।

जे. एल. एस.–1– यह बड़े दानो वाली जाति है तथा 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। औसतन उपज 20–22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसके 100 दानों का वजन 3.1 ग्राम है। यह किस्म सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह एवं रायसेन जिले तथा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है।

जे. एल. एस.–2– यह किस्म 100 दिन में पककर तैयार होती है एवं औसतन उपज 20–22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसका दाना बहुत बड़ा है। 100 दानों का वजन 3.1 ग्राम है। यह म. प्र. के सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह एवं रायसेन जिलों तथा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है।

नूरी (आईपीएल–81)– यह अर्द्ध फैलने वाली तथा शीघ्र पकने (110–120 दिन) वाली किस्म है। इसकी औसत उपज 12–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। 100 दानों का वजन 2.7 ग्राम है। यह किस्म छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्र तथा सम्पूर्ण म. प्र. के लिए उपयुक्त है।

जे. एल.– 3– यह 100–110 दिनों में पककर तैयार होने वाली किस्म है जो 12–15क्विंटल औसत उत्पादन देती है। यह बड़े दानो वाली (2.7 ग्रा/100 बीज) एवं उकठा निरोधी जाति है। मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है।

मलिका (के –75)– यह 120–125 दिनों मे पकने वाली उकठा निरोधी किस्म है। बीज गुलाबी रंग के बड़े आकार (100 बीजों का भार 2. 6 ग्राम) के होते है। औसतन 12–15 क्विंटल /हे. तक पैदावार देती है। छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है।

सीहोर 74–3– मध्य क्षेत्रों के लिए उपयुक्त यह किस्म 120–125 दिन में तैयार होकर 10–15 क्विंटल उपज देती है। इसका दाना बड़ा होता है तथा 100 दानों का भार 2.8 ग्राम होता है।

सपना– यह किस्म 135–140 दिन में तैयार होती है तथा औसतन 21 क्विंटल उपज देती है। उत्तर पश्चिम क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। दाने बड़े होते हैं। रस्ट रोग प्रतिरोधी किस्म है।

पन्त एल–234– यह किस्म 130–150 दिन में तैयार होती है तथा औसतन उपज क्षमता 15–20 क्विंटल प्रति हैक्टर है। उकठा व रस्ट रोग प्रतिरोधी पाई गई है।

बीआर–25– यह किस्म 125–130 दिन में पकती है जिसकी उपज क्षमता 15–20 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है। बिहार व मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त पाई गई है।

पन्त एल–639– भारत के सभी मैदानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त यह किस्म 130–140 दिन में पककर तैयार होती है। इसकी उपज क्षमता 18–20 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है। रस्ट व उकठा रोग प्रतिरोधी किस्म है जिसके दाने कम झड़ते है।

एलएल 699– पौधे छोटे, सीधे और बहुत अधिक शाखाओं वाले होते हैं। इसके पौधे गहरे हरे रंग के होते हैं, बड़ी मात्रा में फलियाँ पैदा करते हैं और जल्दी फूल आते हैं। इसे परिपक्व होने में 145 दिन लगते हैं। इसमें फली छेदक के प्रति उच्च सहनशीलता है। इसमें उत्कृष्ट पाक गुण हैं। प्रति एकड़ औसत अनाज उपज 5 क्विंटल है।

एलएल 931– इसके पौधे छोटे, सीधे और बहुत अधिक शाखाओं वाले होते हैं, इसलिए इनमें बहुत अधिक फलियाँ होती हैं। गहरे हरे पत्ते, गुलाबी फूल, बिना रंग के हरे फलियाँ और अल्पविकसित प्रतान इस पौधे की सभी विशेषताएँ हैं। इसे परिपक्व होने में 146 दिन लगते हैं। इसमें जंग के प्रति उच्च प्रतिरोध और फली छेदक के प्रति उच्च सहनशीलता है। इसके मध्यम आकार के बीज होते हैं जो हल्के धब्बों के साथ भूरे रंग के होते हैं। इसमें उत्कृष्ट पाक गुण हैं। यह औसतन प्रति एकड़ 4.8 क्विंटल उत्पादन करता है।

एलएल 1373– इसके पौधे छोटे, सीधे और बहुत अधिक शाखाओं वाले होते हैं, इसलिए इनमें बहुत अधिक फलियाँ होती हैं। हल्के हरे पत्ते, गुलाबी फूल, बिना रंग के हल्के हरे रंग की फलियाँ और अल्पविकसित प्रतान इस पौधे की सभी विशेषताएँ हैं। इसे पूर्ण परिपक्वता तक पहुँचने में 140 दिन लगते हैं। यह संक्षारण प्रतिरोधी है और फली छेदक के प्रति उच्च सहनशीलता रखता है। इसके बीज बड़े होते हैं जिनका वजन प्रति 100 बीज 3.5 ग्राम होता है। इसमें बेहतरीन पाक गुण हैं। यह औसतन प्रति एकड़ 5.1 क्विंटल उत्पादन करता है।

बॉम्बे 18– यह किस्म 130–140 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 4–4.8 क्विंटल/एकड़ होती है।

डीपीएल 15– यह किस्म 130–140 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 5.6–6.4 क्विंटल/एकड़ है।

डीपीएल 62– 130–140 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। औसत उपज 6–8 क्विंटल/एकड़ होती है।

K 75– यह किस्म 120–125 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 5.6–6.4 क्विंटल/एकड़ है।

पूसा 4076– यह किस्म 130–135 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 10–11 क्विंटल प्रति एकड़ होती है। इसके अलावा एल 4632 आदि किस्म भी पाई जाती हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

उतेरा विधि से बोयी गयी मसूर की फसल में 2% यूरिया या डी.ए. पी. (2 मिली./ली. पानी), एन.पी.के. (19–19–19) का छिड़काव वानस्पतिक अवस्था में और दूसरी बार फली बनने की अवस्था पर करने से लाभप्रद होता है। मसूर में सुखा सहने की क्षमता के कारण उत्पादन में भी वृद्धि होता है।

खरपतवार प्रबंधन

मसूर की फसल में पाए जाने वाले मुख्य खरपतवार बथुआ, अंकारी,

लेथाइरस (चत्रिमात्री) आदि हैं। इनको 30 और 60 दिनों की समयावधि पर 2 गुड़ाई करके काबू में किया जा सकता है। समुचित फसल और उपज के लिए 45–60 दिनों की खरपतवार मुक्त अवधि बनाए रखना चाहिए। बुवाई के 50 दिनों के पश्चात एक गुड़ाई के साथ स्टॉम्प 30EC/550ml/एकड़ का पूर्व–उद्भव छिड़काव, प्रभावी खरपतवार नियंत्रण में सहायता करता है। अगर उतेरा विधि में धान की कटाई के 35–40 दिन बाद उतेरा फसल में एक निराई–गुड़ाई अवश्य करना चाहिए।

सिंचाई

सिंचित क्षेत्रों में इसे 2–3 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। बुवाई के 4 सप्ताह बाद एक सिंचाई जरूर करनी चाहिए और दूसरी फूल निकलने की अवस्था में करनी चाहिए। फलियां भरने और फूल निकलने की अवस्था सिंचाई के लिए गंभीर अवस्थाएं होती हैं।

कीट प्रबंधन

मसूर की फसल में मुख्य रूप से माहु तथा फली छेदक कीट का प्रकोप होता है। माहू का नियंत्रण इमिडाक्लोरोप्रीड 1 मिलीलीटर दवा प्रति 3 ली. पानी एवं फली छेदक हेतु इमामेक्टीन बेजोइट 5 एस.जी. 0.2 ग्रा./लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिये।

रोग नियंत्रण

पद गलन

यह रोग पौधे पर प्रारंभिक अवस्था में तना भूमि सतह के पास सड जाता है। जिससे पौधा खिंचने पर बडी आसानी से निकल आता है। सडे हुये भाग पर सफेद फफुंद उग आती है जो सरसों की राई के समान भूरे दाने वाले फफूंद के स्कलेरोषिया है। बीज को 2 ग्राम थाइरम/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बुआई करनी चाहिये।

जड़ सडन

यह रोग मसूर के पौधों पर देरी से प्रकट होता है, रोग ग्रसित पौधे खेत में जगह जगह टुकडों में दिखाई देते हैं व पत्ते पीले, पौधे का सूखना तथा जड़े काली पड़कर सड़ जाती है। बीज को 2 ग्राम थाइरम/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बोआई करनी चाहिये।

गेरूई रोग

इस रोग का प्रकोप होने पर सर्वप्रथम पत्तियों तथा तनों पर भूरे अथवा गुलावी रंग के फफोले दिखाई देते हैं जो बाद में काले पड जाते है रोग का भीषण प्रकोप होने पर सम्पूर्ण पौधा सूख जाता है। प्रभावित फसल में हेक्जाकोनाजोल 0.1% या 0.3% मेन्कोजेब एम–45 का 15 दिन के अन्तर पर दो बार छिडकाव करना चाहिये।

कटाई, मड़ाई एवं उपज

मसूर की फसल के पककर पीली पडने पर कटाई करनी चाहियें। पौधें के पककर सूख जाने पर दानों एवं फलियों के टूटकर झडने से उपज में कमी आ जाती है। फसल को अच्छी प्रकार सुखाकर बैलों या मशीन से मडाई तथा औसाई करके दाने को भूसे से अलग कर लेते हैं। मसूर की फसल का सिंचित परिस्थितियों में उन्नत सस्य विधियों और नवीन प्रजातियों के उपयोग से यह उपज 18–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त की जा सकती है तथा उतेरा विधि से 12–15 कु./हें. दाना एवं 18–20 कु./हें. भूसे की उपज प्राप्त होती है।

अमितेश कुमार सिंह– श्रीप्रकाश सिंह[1]– नवीन कुमार सिंह– मनीष पाण्डेय[1]– राहुल कुमार सिंह[1]– प्रतीक्षा सिंह[1]– पूजा सिंह[1] – अमित कुमार सिंह
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229 (उ.प्र.)

AGROXY CROPS SOLUTIONS PVT. LTD.
A-9, West Jyoti Nagar, Durgapuri Chowk Shahdara, Delhi -94
Phone: 011 - 2281 5345, 9625941688
Email: info@fasalkranti.in, Website: www.fasalkranti.in
Fasal Kranti
New Vision for Agriculture

सदस्यता फॉर्म

नाम..
पिता का नाम..
पता..
जिला/शहर..राज्य..
पिनकोड.................... मोबाईल.................... ईमेल ....

Year	Issue	Price (Rs.)	Discount (Rs.)	Total Amount
☐ 1	12	720	0	720
☐ 2	24	1440	140	1320
☐ 3	36	2160	360	1800
☐ 5	60	3600	600	3000

तिथि हस्ताक्षर

Bharat Certis AgriScience Ltd.

A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan

आधुनिक तकनीक का भरोसा !
अधिक उत्पादन एवं उत्तम सुरक्षा !!

संपर्क करें

8882 426 426

भारत सर्टिस किसान ऐप

प्ले स्टोर से डाउनलोड करें

सितम्बर महीने के कृषि कार्य

सितम्बर माह में अधिकतर खरीफ फसलें वानस्पतिक वृद्धि के अंतिम दौर में होती है तथा कुछ फसलों की वानस्पतिक वृद्धि लगभग पूरी हो जाती है तथा कुछ फसलों में पुष्पावस्था, दूधियावस्था, फली विकास, एवं दाने बनने का समय इसी माह में सामान्यतः आता है। सितम्बर माह में फसलों में नमी की कमी होने पर सिंचाई देना आवश्यक है। इस माह में बहुत सी फसलो की महत्वपूर्ण वृद्धि का चरण होते हैं जिनमें नमी होना आवश्यक है। इस माह में विभिन्न खरीफ फसलों में कीड़े–मकोड़ों एवं रोगों द्वारा होने वाली हानि को रोकना भी आवश्यक है। इन फसलों की उपयुक्त सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। प्रस्तुत लेख में उपरोक्त महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा रही रही है।

धान की उचित देखभाल

- इस माह मे धान की फसल मे पुष्पन अवस्था का समय होता है तथा उनमे दानों का विकास भी आरंभ हो जाता है। इस समय धान की फसल में नमी की कमी नहीं होनी चाहिए।
- इस समय धान का ब्लास्ट, बदरा या झोंका रोग कवक से फैलता है। वृद्धि अवस्था में यह रोग पत्तियों पर भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देता है। इनके धब्बों के किनारे कत्थई रंग के तथा बीच वाला भाग राख के रंग का होता है। फलतः दाने का भराव भी पूरा नहीं हो पाता है। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम 1000 या ट्राइसायक्लेजोल 500 ग्रा. का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हैक्टेयर में छिड़काव करें।
- तना छेदक की सूंडियां भी फसल को हानि पहुंचाती हैं। बाली आने से पहले इनके हानि के लक्षणों को डेड–हार्ट तथा बाली आने के बाद सफेद बाली के नाम से जाना जाता है। इसकी रोकथाम के लिए दानेदार कीटनाशी जैसे कार्बोफ्यूरॉन 3 जी या कारटैप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी या फिप्रोनिल 0.3 जी 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें अन्यथा क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी 2 मि.ली./लीटर या क्विनलफॉस 25 ईसी 2 मि.ली./लीटर या कारटैप हाइड्रोक्लोराइड 50 एसपी 1 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें।
- इस माह में धान की फसल में गंधी कीट का प्रकोप हो सकता है, गंधी कीट द्वारा काफी क्षति हो सकती है। इसके शिशु व वयस्क दोनों ही दूधिया अवस्था में दानों से रस चूसकर इन्हें खाली कर देते हैं। ऐसे दानों पर काला निशान भी बन जाता है। आवश्यकतानुसार क्विनलफॉस 25 ईसी 3 मि.ली./लीटर पानी का छिडकाव करें अन्यथा कार्बेरिल या मिथाइल पैराथियान धूल 25–30 कि.ग्रा. /हैक्टेयर को धूलित करें।
- धान की फसल में पौध फुदकों द्वारा भी इस माह हानि की संभावना रहती है। पौध फुदके भूरे, काले एवं सफेद रंग के छोटे–छोटे कीट होते हैं जिनके शिशु व वयस्क दोनों ही पौधों के तने व पर्णाच्छद से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं। फसल पर इस कीट की निगरानी बहुत जरूरी है क्योंकि फुदके तने पर होते हैं तथा पत्तों पर नहीं दिखते। इनकी निगरानी के लिए प्रकाश–प्रपंच (लाइट ट्रैप) का प्रयोग भी किया जा सकता है। आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 1 मि.ली./3 लीटर पानी या थायोमेथोक्जम 25 डब्ल्यूपी 1 ग्राम/5 लीटर या बीपीएमसी 50 ईसी 1 मि.ली./ली. या कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम/लीटर या बुप्रोफेजिन 25 एससी 1 मि. ली./ली. पानी का छिड़काव करें। छिड़काव करते समय नोजल पौधों के तनों पर रखें। दानेदार कीटनाशी जैसे कार्बोफ्यूरान 3 जी या फिप्रोनिल 0.3 जी 25 कि.ग्रा./हैक्टेयर भी प्रयोग कर सकते हैं।

बाजरा, मक्का और ज्वार की देखभाल

- इस माह समय से बोई गई अधिकतर किस्मों में पुष्पवस्था के बाद दूधिया अवस्था या फिर दाने सख्त होने का समय होता है। इस समय यदि खेत में नमी की कमी दिखाई दे तो एक बार हल्की सिंचाई अवश्य कर दें।
- इस माह ज्वार के दाने का कंड (स्मट) रोग सबसे हानिकारक कवक जनित रोग है। इसका प्रकोप पौधों में भुट्टे निकलते समय होता है। यह मुख्यतः बीज द्वारा फैलता है। इस कवक के बीजाणु अंकुरण के समय जड़ों द्वारा पौधों में प्रवेश कर जाते हैं। पौधों में भुट्टे आने पर दानों की जगह कवक के काले बीजाणु भर जाते हैं। बीजाणु बाहर से एक कड़ी झिल्लीदार परत से ढके रहते हैं जिसके फटने पर वे बाहर आकर फैल जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए बीज को किसी कवकनाशी दवा जैसे–कैप्टान या वीटावैक्स पावर से 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करें।
- संकर ज्वार में अर्गट रोग का प्रकोप अधिक आता है। इस रोग के बीजाणु हवा द्वारा फैलते हैं तथा इसका प्रकोप फसल में फूल आने के समय होता है। पुष्प शाखा पर स्थित स्पाइकिल से हल्के गुलाबी रंग का गाढ़ा व चिपचिपा शहद जैसा पदार्थ निकलता है जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों के लिए हानिकारक होता है। अर्गट रोग से ग्रसित भुट्टों को काटकर जला देना चाहिए। भुट्टों में दाना बनने की अवस्था पर थीरम (0.2 प्रतिशत) के 2–3 छिड़काव करके रोग के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
- ज्वार में मिज कीट से हानि की काफी संभावना होती है। यह कीट ज्वार में भुट्टे (बाली) निकलने के समय फसल को नुकसान पहुंचाता है। इसकी रोकथाम के लिए कार्बारिल 50 डब्ल्यूपी कीटनाशक का ज्वार में भुट्टे निकलते समय 4–5 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

आलू, मटर एवं तोरिया की बुवाई

देश के मैदानी क्षेत्रों में आलू की अगेती बुवाई का समय 25 सितम्बर से 10 अक्टूबर है। पहाड़ी क्षेत्रों मे इसकी बुवाई का उचित समय घाटियों में सितम्बर व फरवरी एवं ऊंची पहाड़ियों पर मार्च–अप्रैल है। आलू का बीज सरकारी संस्थानों और बीज निगमों से खरीदें। आलू का बीज तीन–चार साल बाद अवश्य बादल दें अन्यथा बीज में विषाणु रोग बढने की संभावना रहती है। आलू की बीजदर 20–25 कुंतल/ हे. है। अच्छा अंकुरित 30–40 ग्रा० भार का आलू लगायें। आलू के लिए 120–150 कि०ग्रा० नाइट्रोजन, 60–80 कि०ग्रा० फास्फोरस एवं 50–60 कि०ग्रा० पोटाश प्रति हे. की आवश्यकता होती है। मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों की मात्रा बढ़ाई या घटाई जा सकती है। जिन किसानों के पास गोबर की खाद उपलब्ध हो वे 10–15 टन प्रति हे. की दर से आलू की

बुवाई से एक माह पूर्व खेत में डालें।

इस माह में सब्जी मटर की अगेती फसल उगाकर अधिक लाभ लिया जा सकता है। सब्जी मटर की बुवाई सितम्बर–अक्टूबर में की जाती है। हमारे देश के कई हिस्सों में इसकी खेती व्यापारिक स्तर पर की जाती है। मटर को हल्की बलुई दोमट से लेकर मटियार दोमट तक की विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है। हालांकि मटर के लिए उपयुक्त भूमि अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी होती है। किन्तु क्षारीय मिट्टी में इसकी पैदावार अच्छी नहीं होती है। मटर के लिए सबसे उपयुक्त पी. एच. मान 6.0 से 7.5 है। सब्जी मटर की प्रमुख अगेती किस्में अर्का अजित (43–45 दिन), आजाद मटर 1 (110–115 दिन), आजाद मटर 5 (100–120 दिन), बोनविले (80–85 दिन), हारा बौना (45–50 दिन), जवाहर मटर 1 (80–90 दिन), जवाहर मटर 5 (130–140 दिन), काशी मुक्ति (90–100 दिन), काशी नंदिनी (80–85 दिन), काशी शक्ति (115–125 दिन), काशी उदय (90–100 दिन), नरेंद्र सब्जी मटर 4 (110–120 दिन), नरेंद्र सब्जी मटर 5 (115–120 दिन), पंजाब 87 (100–120 दिन), पंजाब 88 (100–120 दिन) एवं स्वर्णा मुक्ति (100–120 दिन), आदि है। अगेती बौनी किस्मों को 30 सें.मी. दूरी पर बनी कतारों में बोएं जिसके लिए 100–120 कि.ग्रा./हे. बीज की आवश्यकता होती है। मटर के लिए 25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60–70 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 30–40 कि.ग्रा. प्रति हे. की संस्तुति की गई है। सितम्बर में बोई गई फसल में तना वेधक कीट के प्रकोप की अधिक संभावना होती है। इस कीट की रोकथाम के लिए फ्यूराडान (3 प्रतिशत ग्रेन्यूल) 30 कि.ग्रा./हे. की दर से बुवाई के समय कूड़ों में प्रयोग करें।

तिलहनी फसलें

- मूँगफली में सफेद गिंडार कीट की गिंडारें पौधों की जड़ें खाकर पूरे पौधे को सुखा देती हैं। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेरिल 50 डब्ल्यू पी 4 ग्रा./ली. या मोनोक्रोटोफास 36 डब्ल्यू एस सी 1.5 मि.ली./ली. या क्लोरपाइरीफोस 20 ई सी 1.5 मि.ली./ली. का छिड़काव करें।
- तिल की फसल में यदि कीड़े–मकोड़ों अथवा रोगों का प्रकोप दिखाई दे तो गत माह बताए गए उपायों को अपनाकर इनकी रोकथाम करें। तिल की फलियां जब चटकना शुरू होने लगें या फलियों और पत्तों का रंग पीला पड़ जाए तब फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। देरी से कटाई करने पर फलियों के चटकने से बहुत अधिक नुकसान होता है। फसल को काटकर 4–5 दिन धूप में सुखाने के बाद मड़ाई करनी चाहिए।
- सोयाबीन में पत्ती खाने वाली इल्लियों के नियंत्रण हेतु सूक्ष्मजीव आधारित जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करें। बैक्टीरिया आधारित–बायोबिट, डायपेल, बायोआस्प, डेल्फिन, हाल्ट, अथवा फफूंद आधारित–बायोरिन, डिस्पेल को 1 कि.ग्रा. या 1 लीटर प्रति हे. की दर से अथवा विषाणु आधारित कीटनाशक को 250 एल ई की दर से फूल आने अथवा इल्लियों का प्रकोप शुरू होने की अवस्था पर छिड़काव करें। पत्ती खाने वाली इल्लियों के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. (1.5 ली./हे.) या क्विनालफॉस 25 ई सी (1.5 ली. प्रति हे.) या मिथोमिल 40 एस पी (1.0 कि.ग्रा./हे.) का उपयोग करें। जब सोयाबीन की पत्तियों का रंग पीला एवं फलियों का रंग पीला या भूरा हो जाए तो फसल को काट लेना चाहिए।

दलहनी फसलों की देखभाल

- सितम्बर माह मे यदि वर्षा अधिक होने की संभावना रहती है तो खेत से जलनिकास की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। वर्षा वाले क्षेत्रों में दलहन वाली फसलों के लिए जलभराव की समस्या से बचाना बहुत ही जरूरी होता है।
- अरहर में एक सिंचाई फूल निकलने के पहले और दूसरी उसके उपरांत फलियां बनते समय देनी चाहिए। मूंग एवं उड़द में पीला मोजेक (कुर्बरता) रोग काफी हानि पहुंचा सकता है। प्रभावित पौधों में बहुत कम व छोटी फलियां होती हैं। ऐसी फलियों का बीज सिकुड़ा हुआ और मोटा व छोटा होता है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसलिए यह रोगवाहक सफेद मक्खी की रोकथाम से नियंत्रित हो सकता है।
- मूंग एवं उड़द की फसलों को नुकसान पहुंचाने वाली सूंडियों में हेलिकोवर्पा और तम्बाकू की सूंडी प्रमुख हैं। हेलिकोवर्पा की सूंडी फली में छेद कर उसके अंदर का गूदा खा जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार बी टी और एच एन पी वी का छिड़काव करें। कीटनाशक डेल्टामेथ्रिन (1 मि.ली./ली.) का छिड़काव कीटों की संख्या को ध्यान में रखकर करें।

सब्जियाँ

- प्याज, चुकन्दर, सेम, सौंफ एवं पालक आदि की बुवाई भी इस माह कर लेनी चाहिए।
- लता वाली फसलों (लौकी, तुरई, कद्दू, करेला और टिंडा) में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। उचित अवस्था पर फलों की तुड़ाई करके बाजार भेजते रहें।
- फूलगोभी की स्वस्थ पौध की रोपाई खेतों में 60 सें.मी. कतारों तथा 45 सें.मी. पौधों से पौधों की दूरी पर करें।
- मिर्च की फसल में यदि माइट कीट के प्रकोप हो तो इसकी रोकथाम के लिए उपयुक्त कीटनाशी जैसे मोनोक्रोटोफास का छिदकाव करें। आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निकाई–गुड़ाई भी करते रहें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी की निगरानी करते रहें, इसके लिए मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग कर सकते हैं। फल मक्खी के बचाव हेतू खेत में विभिन्न जगहो पर गुड़ या चीनी के साथ मैलाथियान का घोल बनाकर छोटे कप या किसी और बरतन में रख दें ताकि फल मक्खी का नियंत्रण हो सके।
- टमाटर की शीतकालीन फसल उगाने के लिए पौधशाला में पौध तैयार करने के लिए बीज की बुवाई करें।
- जड़दार सब्जियों जैसे मूली, गाजर एवं शलजम की सीधी बीजाई पंक्तियों में 20–30 सें.मी.तथा पौधों में 5–7 सें.मी. की दूरी पर करेंद्य मूली, गाजर एवं शलजम के लिए क्रमशः 8–10, 6–7 एवं 3–4 कि. ग्रा./ है. बीज की आवश्यकता होती है।
- जुलाई माह में लगाई गई बैंगन, टमाटर और मिर्च की फसलें फल देना प्रारम्भ कर देती हैं। अतः फलों की उचित अवस्था पर तुड़ाई एवं छंटाई करके बिक्री हेतु बाजार में भेजें। उपरोक्त फसलों में रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए 1 लीटर मेलाथियान 50 ई.सी. को 600–700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़क दें।

राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम
सस्य विज्ञान संभाग
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली110012

रसोई

बेसन चीला

भारतीय रसोई में नाश्ते के लिए कई तरह की रेसिपी बनाई जाती हैं। इनमें से एक है बेसन चीला, जो स्वादिष्ट होने के साथ–साथ सेहतमंद भी है। इसे बनाना आसान है और यह कम समय में तैयार हो जाता है। बेसन यानी चने का आटा प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होता है। इसमें सब्जियाँ डालकर यह और भी पौष्टिक बन जाता है। आइए जानते हैं इसे बनाने की पूरी विधि।

आवश्यक सामग्री–

(2–3 व्यक्तियों के लिए)

बेसन–1 कप, प्याज– 1 मध्यम आकार का (बारीक कटा हुआ)

टमाटर– 1 छोटा (बारीक कटा हुआ)

हरी मिर्च– 1–2 (बारीक कटी हुई)

हरा धनिया– 2 चम्मच (कटा हुआ)

अदरक–1/2 इंच का टुकड़ा (कद्दूकस किया हुआ), गाजर– ½ कप (कद्दूकस की हुई)

पत्ता गोभी या शिमला मिर्च– 1/2 कप (बारीक कटी हुई, वैकल्पिक)

नमक– स्वादानुसार, हल्दी– 1/2 चम्मच

लाल मिर्च पाउडर– 1/2 चम्मच

जीरा– 1/2 चम्मच, अजवाइन– 1/2 चम्मच (पाचन के लिए उपयोगी)

पानी– आवश्यकतानुसार

तेल– चीला सेकने के लिए

बनाने की विधि–

सबसे पहले एक गहरे बर्तन में बेसन लें। उसमें हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, जीरा और अजवाइन डालें। अब धीरे–धीरे पानी मिलाते हुए बेसन का एक चिकना और गाढ़ापन वाला घोल तैयार करें। ध्यान रखें कि घोल में गाठें न रहें। घोल की स्थिरता ऐसी होनी चाहिए कि चम्मच से आसानी से गिर सके, न बहुत पतला और न बहुत गाढ़ा।

अब तैयार बेसन के घोल में प्याज, टमाटर, गाजर, पत्ता गोभी/शिमला मिर्च, हरी मिर्च, अदरक और हरा धनिया डालें। सब्जियाँ चीले को स्वादिष्ट और हेल्दी बनाती हैं। इन्हें अच्छे से घोल में मिला लें। अब एक नॉन–स्टिक तवा या लोहे का तवा गैस पर गरम करें। तवे को हल्का सा तेल लगाकर चिकना कर लें।

तवा गरम हो जाने पर एक चम्मच घोल लेकर तवे पर डालें और गोल आकार में फैला दें। मोटाई न ज्यादा पतली हो और न ज्यादा मोटी। ऊपर से हल्का सा तेल चारों ओर डाल दें। मध्यम आंच पर चीले को 2–3 मिनट तक सेकें। जब नीचे से सुनहरा भूरा हो जाए, तब उसे पलटकर दूसरी तरफ से भी सेक लें।

आपका गरमा–गरम बेसन चीला तैयार है। इसे आप हरी चटनी, टमाटर की चटनी या दही के साथ परोस सकते हैं।

मोटापा कम करने के आसान उपाय

आजकल बदलती जीवनशैली, गलत खानपान और व्यायाम की कमी के कारण मोटापा (Obesity) एक आम समस्या बन गया है। यह न केवल शरीर की बनावट को प्रभावित करता है, बल्कि हृदय रोग, मधुमेह, ब्लड प्रेशर और थायरॉइड जैसी बीमारियों का खतरा भी बढ़ाता है। अच्छी बात यह है कि मोटापा नियंत्रित करने के लिए कुछ आसान उपाय अपनाए जा सकते हैं।

संतुलित और पौष्टिक आहार लें

मोटापा घटाने की सबसे पहली शर्त है सही खानपान। थाली में हरी सब्जियाँ, दाल, सलाद और मौसमी फल शामिल करें। जंक फूड, तैलीय खाना, मिठाइयाँ और कोल्ड ड्रिंक से दूरी बनाएँ। गेहूँ, जौ, बाजरा और ज्वार जैसे साबुत अनाज खाएँ। भोजन कम मात्रा में और धीरे–धीरे खाएँ।

समय पर और हल्का भोजन करें

सुबह का नाश्ता भरपूर करें, दोपहर का खाना संतुलित और रात का खाना हल्का रखें। देर रात खाना खाने से बचें। दिनभर में 4–5 बार थोड़ी–थोड़ी मात्रा में खाना पचने में आसान रहता है।

पर्याप्त पानी पिएँ

पानी वजन घटाने का सबसे आसान उपाय है। दिनभर में कम–से–कम 8द्10 गिलास पानी पिएँ। गुनगुना पानी पाचन सुधारता है और चर्बी घटाने में मदद करता है। शुगर वाली ड्रिंक्स की जगह सादा पानी, नींबू पानी या ग्रीन टी लें।

रोजाना व्यायाम करें

मोटापा घटाने के लिए व्यायाम जरूरी है। रोजाना 30–40 मिनट पैदल चलें। योग, दौड़, साइकिलिंग और तैराकी बेहद उपयोगी हैं। जिम में कार्डियो और स्ट्रेंथ ट्रेनिंग भी फायदेमंद है।

नींद और तनाव पर ध्यान दें

रोजाना 7–8 घंटे की नींद जरूरी है। नींद की कमी से भूख बढ़ती है और वजन भी। तनाव की वजह से लोग ज्यादा खाते हैं, जिससे मोटापा बढ़ता है। योग, ध्यान और गहरी साँस लेने से तनाव नियंत्रित किया जा सकता है।

घरेलू नुस्खे अपनाएँ

सुबह खाली पेट नींबू पानी में शहद डालकर पिएँ। ग्रीन टी, दालचीनी और अदरक पाचन तंत्र को बेहतर बनाते हैं। ये उपाय तभी असरदार होंगे जब आहार और व्यायाम के साथ अपनाए जाएँ।

स्क्रीन टाइम और सुस्ती कम करें

टीवी, मोबाइल और कंप्यूटर पर ज्यादा समय बिताने से गतिविधि कम हो जाती है। दिनभर में पैदल चलने, सीढ़ियाँ चढ़ने और छोटे–छोटे शारीरिक कार्यों को आदत बनाइए।

निष्कर्ष

मोटापा कोई रातोंरात नहीं घटता, इसके लिए निरंतर प्रयास जरूरी हैं। सही आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त पानी, अच्छी नींद और तनावमुक्त जीवनशैली से धीरे–धीरे वजन नियंत्रित किया जा सकता है। याद रखें– "स्वास्थ्य ही असली धन है।"

Group Company of
DE SANGOSSE

Kan Biosys™

सुडो और मिलॅस्टीन के

करें हानिकारक रोगों से फसलों की सुरक्षा

फायदे -

- फफूंदजनित (पाउडरी मिल्ड्यू, डाउनी मिल्ड्यू, झुलसा, रतुआ, जड़ सड़न) रोगों से सुरक्षा।
- जीवाणुजनित (बैक्टीरियल झुलसा, पत्ती धब्बा) रोगों का प्रभावी नियंत्रण।
- अत्यधिक ठंड में फसलों को फ्रॉस्ट इंजरी से बचाएं।
- कोहरे से होने वाले रोगों के नियंत्रण में सहायक।
- १५ दिन में एक बार छिड़काव करने पर अधिक लाभकारी।

सुडो 5 ग्रॅम + मिलॅस्टीन के 2.5 मिली/लिटर
ऑक्टिवेटर टेक्नोलॉजी के साथ

टिप: कॅन बायोसिस के उत्पादों का उपयोग कॉपर और एंटीबायोटिक के साथ न करें।

डीलर नियुक्ती एवम् अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निखिल शिंदे - (RSM)
रायपुर : +91 97630 99051

अक्षय देशमुख - (ASM)
बिलासपुर: +91 98344 81760

kanbiosys.com

*Copyright @ Kan Biosys

Organized By
Radeecal communications
GPDFA
नई कृषि तकनीक
के लिए
विशाल प्रदर्शन
गुजरात का नंबर 1 कृषि-प्रदर्शन
विशेष आकर्षण
लाइव पशु स्पर्धा
एवं पशु प्रदर्शनी
पोल्ट्री पेवेलियन
(हॉल नंबर 12 में)
14th Agri Asia®
Asia's Prime Exhibition On Agriculture Technology
१८-१९-२० सितम्बर २०२५
हेलीपैड एग्जिबिसन सेन्टर, गांधीनगर, गुजरात
250+
प्रदर्शक
1,25,000+
विजिटरो की कुल संख्या
100+
डीलर्स भारत भर में
500+
प्रतिनिधि
20+
सम्मेलन वक्ता
50+
अंतर्राष्ट्रीय खरीदार
अपना स्टॉल अभी बुक करें
In Association with
Supported By
Conference Partner
Concurrent Events
Amul
GAMMA
IGMA
Agro House
DLP EXPO ASIA
DAIRY LIVESTOCK AND POULTRY EXPO
AGRI COMPONENTS
+91 91738 26807
E: agriasia@agriasia.in | W: www.agriasia.in

इलेक्ट्रॉन
UPL
जो चुने सही,
चैंपियन वही!
सम्पूर्ण बीजोपचार
आलू के बीजोपचार
के लिए,
मात्रा 400 मिली
प्रति एकड़
ELECTRON
दोहरी सुरक्षा
बेहतर अंकुरण
उच्च पैदावार
nurture.farm
अधिक जानकारी के लिये नर्चर केयर पर कॉल करें 18001021199

TOYOTA
EXPERIENCE Awesome FUEL EFFICIENCY
WITH E-CNG
URBAN CRUISER
HYRYDER
STARTING FROM
₹13.81 lakh*
MILEAGE:
26.60 km/kg*
URBAN CRUISER
HYRYDER
Awesome
TOYOTA CARS
LAND CRUISER 300
VELLFIRE
CAMRY
LEGENDER
FORTUNER
HILUX
INNOVA HYCROSS
INNOVA CRYSTA
RUMION
URBAN CRUISER TAISOR
GLANZA
TALK TO TOYOTA
TOYOTA FINANCIAL SERVICES
TASSIST
TSECURE
TOYOTA TRUST
TCARE
TGLOSS
TSPARSH
AMBALA
GLOBE
Opp Spring Field School, NH-22
97295 49128, 98076 80680
BAHADURGARH
SATYAM
A-94 MIE Part B, Opp. Metro Pillar No. 780, Delhi - Rohtak Road
01276-224180, 82959 88030
DABWALI
MALIK
Opp. Civil Hospital, Chautala Road, Dabwali
90537 88801
FATEHABAD
MALIK
Bhuna Mor, NH-10, Hisar-Sirsa Road, Fatehabad
85728 88830
HANSI
MALIK
Near Bhai Ji Dhaba, Delhi Road, Hansi
90537 88831
HISAR
MALIK
14.5 Mile Stone, NH-65, Chandigarh Road, Hisar
99967 88827, 99967 88829
JIND
GLOBE
Rohtak Road, Truck Union Office, Ram Nagar, Jind
97295 49128, 98076 80680
KAITHAL
GLOBE
3 km Milestone, Kaithal Ambala Road, Kaithal
97295 49128, 98076 80680
KARNAL
GLOBE
Opp. P T C Madhuban, N.H-1 G T Road
97295 49128, 98076 80680
PALWAL
THIRTY SIX
Next to Omaxe City, NH 2, Delhi Mathura Road
81999 08186, 81999 00187
PANIPAT
GLOBE
Village Karhans, Tehsil-Samalkha
97295 49128, 98076 80680
ROHTAK
SATYAM
Hisar Road, Nr. Old Banger Flyover, (Beside Old Bus Stand)
01262-243480, 88136 88123
SIRSA
MALIK
Near Maharaja Palace, Dabwali Road, Sirsa
85728 88801, 85728 88880, 85728 88881
SONIPAT
SGM
Jeewan Vihar Colony, Murthal Road, Near Aggarsain Chowk
70158 21000, 92549 67500
TOHANA
MALIK
Ratia Road, Tohana
99967 88839
YAMUNANAGAR
GLOBE
Village Mauja Kail, Tehsil Jagadari
97295 49128, 98076 80680
*Terms & conditions apply on all schemes & offers. Offer valid for limited period. Starting price is for S MT 2WD CNG model. Fuel efficiency as certified by Test Agency under rule 115 of CMVR, 1989 under standard test conditions. Actual mileage on road may vary. Ex-showroom price. Finance at the sole discretion of Financier. Creative visualisation-Digitally created visual. Picture of the vehicle was not taken while driving. Accessories shown may not be part of standard equipment.

ADV 414
ADVANTA
सरसों का सरताज
करे हर खेत में राज
ADV 414
मोटे एवं वजनदार दाने
तेल की अधिक मात्रा
ज्यादा शाखाएँ, फलियाँ एवं ज्यादा दानों की संख्या
प्रमुख बीमारियों के प्रति बेहतर सहनशीलता
ADVANTA
ADV 414
HYBRID MUSTARD SEED

ADV 427
ADVANTA
मोटा दाना
मोटा मुनाफा
मोटे एवं वजनदार दानें
तेल की अधिक मात्रा
ज्यादा शाखाऐं, फलियां एवं फलियों में ज्यादा दानों की संख्या
हर प्रकार की जमीन, कम पानी में भी बेहतर प्रदर्शन
ADVANTA
ADV 427
HYBRID MUSTARD SEED
अधिक जानकारी के लिए कृपया व्हाट्सएप करें
98870 91390

आयशर ट्रैक्टर्स
PRIMA G3
551 SUPER PLUS 4WD
12+3 SPEEDS
₹974000*
आयशर 557
12+3 CREEPER
₹894000*
स्पेशल ऑफ़र...
सुपर सीडर 2 मी* (7 फुट)
मात्र ₹100000* में
दर्शाये गए मॉडल की खरीद पर*
EICHER
EICHER TRACTORS 65 YEARS
टोल फ्री नंबर : 1800 2020 200
ऑफ़र हरियाणा के आयशर ट्रैक्टर डीलर्स की ओर से सीमित समय के लिए मान्य । *नियम व शर्तें लागू
Manufactured and Marketed by TAFE Motors and Tractors Limited, under a licence from Eicher Goodearth Private Limited. EICHER is the exclusive trademark of Eicher Goodearth Private Limited.

RNI No. DELHIN/2014/59516

Delhi Postal Regd. No.:DL(E)-20/5477/2024-26
Published on 5th & Posted on 7th - 8th of Every Month